मगही के पहिला उपलब्ध उपन्यास

फूल बहादुर

जयनाथ पति



मोहब्बत के पानी जो दरखत के जिन्दा नै रखत
ओकरा रौब और रुसबत के कीड़ा
कब तक बचावत?

जयनाथ पति
(1890-1939)

फूल बहादुर

मगही के उपलब्ध पहिला उपन्यास

जयनाथ पति



प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
राँची (झारखंड)

आवरण सज्जा : बीर बुरु ओम्पाय मीडिया
आवरण चित्र :
प्रथम संस्करण : 1928
द्वितीय संस्करण : 1974
(प्रकाशक : बिहार मगही मंडल, पटना-5)
तृतीय संस्करण : 2018
प्रकाशक : प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन, रांची (झारखंड)
संपर्क : 926297551, ई-मेल : toakhra@gamil.com

PHUL BAHADUR
(Magahi novel by **Jainath Pati**)

परिछन आउ मुख बंध से पहिले

मगही भाषा-साहित के पहिला अगुआन जयनाथ पति से हम्मर भेंट दिसंबर 2017 में होल। जखनी हम्म मगही में कहानी लिखे ला सोंचली। सोंचे के त सोंच लेली बकी मगही पहिले कब्भो लिखले न हली। बड़ मोसकिल। हम्मर मन धुकपुकाइत हल। कइसे लिखलबइ। बेयाकरन-उकरन त छोड़ऽ, मगही के एगो अक्षर भी कहियो नयं देखले हियइ। बहुत सोंचली फिन एहे बिचार आयल कि बरतनी-बेयाकरन के पचड़ा में पड़े से अच्छा हे कि सीधे लिखना सुरू कर कर देल जाय। तइयो खोजे लगली लिखल-छपल मगही। मगही पत्रिका 'सारथि' के काजकारी संपादक आउ पटना के बड़ भाय नरेन कुछ दिन पहिले मगही के कय गो किताब देले हलन, ओकरा उलट-पुलट के देखलियइ। इंटरनेट आउ सोशल मीडिया प भी खोजलियइ त भाय नारायण प्रसाद जी के समरिध ब्लॉग भेंटायल। हुआं मगही के ढेर सामग्री हे। ई बीच मगही भाषा आउ साहित के अगुआन धनंजय श्रोत्रिय से भी पटना में मुंहामुंही होयली। मगही साहित प भाय निराला से लगातार बतकही। कहे के मतलब हे कि सब रकम के जुगत कयली हम मगही के अंकवार में भरे लेल। तब ओहे दौरान छोट भाय अरुण नारायण से, जे सबार्ल्टन साहित के धुनी-गुनी हथ, 'फूल बहादुर' के जेरोक्स कॉपी मिलल। 'फूल बहादुर' 1928 में बाबू जयनाथ पति के लिखल दूसर उपन्यास हे। अनमोल, अजगुत आउ अलबत्त उपन्यास।

जयनाथ पति गुलाम भारत में मोखतार हलन। मोखतार मने अंगरेजी राज-काज में शासन-बिधान से जुड़ल बेस मातबर बिदमान। गांव सादीपुर, जिला नवादा (बिहार) के मूल रहनिहार जयनाथ बाबू के जलम 1890 में आउ मिरतु 21 सितंबर 1939 में होल हलइ। जयनाथ पति मगही भाषा आउ साहित के पहिल अगुआन हथ। आधुनिक साहित के दुनिया में मगही बोलंत के लिखंत बनावे ओला पहिला चितेरा। एगो अइसन सुघड़ धुनी-गुनी बेकति जे मायभासा ला रकटइत हल। पुरनका कीकट आउ नयका मगध-बिहार में

मगही के दूध-बोल खातिर छछनइत हल। माय के अंचरा से सबद-फूल चुनइत-बिछइत फटकइत-ओसराइत हल। आधुनिक लिखंत भाषा-साहित में जे अप्पन मायभासा के सोभा सुंदरइ छछात दरसावे के अगम संकलप से भरल हल।

कहल गेल हे कि मायभासा के मान उहे समझऽ हे, जेकरा भिरु अजादी के भाव होवऽ हे। मुकति आउ मायभासा दुन्नो एकदोसर के परयाय हइ। नैसरगिक मुकति के अभिव्यक्ति हे मायभासा। मुकति के बेगर मायभासा नयं आउ मायभासा के बेगर मुकति नयं। एहे लेल जयनाथ पति मुकति आउ मायभासा दुन्नो के मचान प मजगुती से ठाड़ हलथी। अंगरेजी राज के खिलाफ जनता में जन-जागरिति लावे, सबके संगठित करे, लड़वइया सब के हर रकम के मदद देवे में उनखर नेतत्वकारी भूमिका हलइ। 30 के दशक में राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान घर के तहखाना में हाथ से लिखल एगो अखबार निकालऽ हलथी। जेकरा ऊ, उनखर माउग श्यामा देवी आउ सुराजी संघतिया लोग राते-रात सब दने बांट आवऽ हलथी। ई हस्तलिखित अखबार में ब्रिटिश शासन बिरोधी लेख, समाचार, खिस्सा-कहानी आउ गीत-कबिता रहऽ हल। रगत के खउला देवे ओला नस-नस में अजादी के भाबना रोपे ओला। मुकति के चाह से भरल। मगही माटी में मुकति आउ मायभासा के अलख जगवे ओला जयनाथ पति के एकर 'महसूल' (कीमत) भी चुकावे पड़लइ। 'राष्ट्रद्रोह' के अपराध में उनका जेहल भेल। मायभूमि के अजादी मांगे के 'अपराध' में 1930 में उनखा नव महिन्ना हजारीबाग जेहल खटे पड़लइ। नवादा-गया इलाका में ऊ कांग्रेस के राष्ट्रवादी आंदोलन के परमुख खम्भा हलन। जोन भवन में अखनी नवादा जिला कांग्रेस कारजालय हइ, अस्सल में ऊ जयनाथ बाबू के ही घर हे।

मगहिया भाषा-साहित के ई पहिल पुरखा कय गो भाषा के अगम बिदमान हलथी। अशोक प्रियदर्शी अपन एगो लेख में बतयलन हे कि 'जयनाथ पति कई भाषाओं के मर्मज्ञ थे, उनकी प्रतिभा इतनी विलक्षण थी कि वह एक ही समय में अपनी दोनों हाथों से अलग-अलग भाषाओं में लिखने में प्रवीण थे। इस तरीके से वे जीवनपर्यन्त हस्तलिखित अखबार निकालते रहे। इस अभूतपूर्व योगदान के कारण वे डा. राजेन्द्र प्रसाद के भी प्रिय पात्र थे। ब्रिटिश सवडिविजनल आफिसर 'लूकस' भी जयनाथ पति की

विद्वता के कायल थे। इनसे संस्कृत पढ़ने के लिए लूकस बग्घी से उनके आवास पर आया करते थे।'[1]

अशोक प्रियदर्शी एहे लेख में आगे लिखऽ हथ, 'जयनाथ पति एक साथ कई भूमिका का निर्वहन कर रहे थे। एक लेखक के नाते अखबार निकाल रहे थे। मोख्तार होने के कारण ब्रिटिश हुकुमत से कानूनी लड़ाइयां भी लड़ रहे थे। वे एक निर्भिक राष्ट्रवादी थे। होमरूल आंदोलन के स्थानीय स्तर पर एकमात्र सदस्य थे। 1920 में गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन के समय नवादा कांग्रेस कमेटि के अध्यक्ष के रूप में भी नेतृत्व प्रदान किए थे।...यही नहीं, सामाजिक बुराईयों पर प्रहार करने के लिए मगही भाषा में कई उपन्यास की रचना की। 1928 में 'सुनीता' और 'फूल बहादुर'...फिर उन्होंने 'गदहनीत' उपन्यास की रचना की। उन्होंने 'गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट 1935' का मगही अनुवाद-स्वराज- को 1937 में छापा था। वे वेदशास्त्र के पंडित और इतिहास के गंभीर अध्येता थे। यही नहीं, नवादा नगर में एंग्लो संस्कृत स्कूल की स्थापना की थी, जो आज भी मौजूद है।'[2]

मगही साहित के जानल-मानल अगुआन राम नन्दन के मोताबिक बाबु जयनाथ पति '... पढ़े में खूब जेहनगर हलन। ई आई॰ ए॰ पास करके मोख्तारी के इम्तिहान पास कइलन। नवादा में इनखर मोख्तारी खूब चलल। इनका संस्कृत, अंगरेजी, महाजनी, बंगला आउर लैटिन भासा के जानकारी हल; उर्दू-फारसी के तो पारंगते हलन। धर्म-चर्चा में खूब दिलचस्पी हल। गांधीजी के सुराज आंदोलन में भी भाग लेलन। सन् 1931 ई॰ में नमक-कानून तोड़े के ओजह से ई कोट में बंद कर देल गेलन। पहिले रेभेन्यू केस में मोख्तार सब बहस नय करऽ हलन, इनखे कोरसिस से मोख्तार सब के रेभेन्यू केस में बहस करे के अधिकार मिलल।'[3]

जयनाथ बाबू पहिले अंगरेजी में लिखऽ हलथी। काहे कि 1920 के बेरा में उनखर कय गो शोधपूर्ण लेख तखनी के महत्वपूर्ण जरनल में प्रकाशित होयल हे। वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आउ आर्य-अनार्य संबंधी इतिहास आउ भाषा में उनखर बिसेस रुचि हल। 'द जर्नल ऑफ द बिहार एंड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी' आउ 'इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली' जइसन तखनी के कय गो परतिस्ठित पत्रिका में छपल उनख लेख के देखे से मालूम होवऽ हे कि न केवल भारतीय बलुक दुनिया के इतिहास आउ संस्कृति प उनखर केतना जबर

पकड़ हलइ। 'द जर्नल ऑफ द बिहार एंड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी' (1920) के अंक 6 में छपल 'द डिफरेंट रॉयल जिनोलॉजिज ऑफ एनसिएंट इंडिया' आउ एहे जरनल के अंक 9, 1923 में छपल 'द लॉ ऑफ लोन इन लैंग्वेजेज' से भाषा-संस्कृति, इतिहास, समाज आउ एथनोलॉजी के वैश्विक बौद्धिक दुनिया में जयनाथ बाबू के बिसेस परसिधि मिललइ। 'इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली' के 1928 के अंक में छपल 'इज द इंडो-आर्यन इनवेसन ए मिथ?' जइसन मौलिक, गंभीर आउ दिमाग के मह देवे ओला लेख दुनिया भर के इतिहासकार आउ बिदमान सब्भ के हिला देले हलइ। एकरा अलावा उनखर लिखल तीन गो आउ लेख भेंटा हइ 'द डेट ऑफ जोरोस्टर' (इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली, अंक 5, जून, 1929), 'द कैकेयज-एन इरानियन ट्राइब' (जर्नल ऑफ द के. आर. कामा ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, अंक 17-24, 1930) आउ 'जरथुस्त्र ओर युधिष्ठिर, व्हिच इज द कॉपी?' (जर्नल ऑफ द के. आर. कामा ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, 1935)।

हम्मरा बुझा हे कि 'द डिफरेंट रॉयल जिनोलॉजिज ऑफ एनसिएंट इंडिया' आउ 'द लॉ ऑफ लोन इन लैंग्वेजेज' के छपे के बाद ही उनखर बौद्धिक मुठभेड़ सुनीति कुमार चाटूर्ज्या से होल होतइ। काहे कि एहे दुन्नो लेख छपे के बाद जयनाथ बाबू आउ सुनीति बाबू में लंबा बहस चलल हलइ। ई बहस के जनकारी 'जयनाथ पति टू एस. के. चाटुर्ज्या'[4] से मिलऽ हे जेकर चर्चा ऊ घरी के कय गो पत्रिका कयले हे। साइत एकरे बाद उनखर धेयान मायभासा पर गेल आउ ऊ ठान लेलन कि मगही भाषा के महत्ता आउ सुंदरइ दुनिया के बतवल जाय। काहे कि सुनीति बाबू बेर-बेर ई बात के लिखलन हे कि मगही समाज के पढ़ल-लिखल लोग अप्पन भाषा बोले में लजा हथ। बानगी के तौर पर सुनीति बाबू के ई कहनाम देखल जाय, 'जहां तक मगही का नया साहित्य खड़ा करने की बात है, तो शायद अब बहुत देर हो चुकी है। क्योंकि शिक्षित और अशिक्षित दोनों तरह के ही मगही लोग मातृभाषा पर गर्व नहीं करते बल्कि वे हिंदी के, जो एक प्रकार से उच्च हिंदी और अवधी का मिश्रण है, मुकाबले अपनी 'देसी भाषा' को लेकर शर्मिन्दगी महसूस करते हैं।'[5] ...'मगही बोलने वाले शिक्षित, चिंताशील, किसी नेता ने विकेन्द्रिकरण का सवाल पेश नहीं किया।'[6]

जयनाथ बाबू के लिखल से भी अइसने मालूम पड़ऽ हे। उहो 'फूल

बहादुर' के 'मुख बंध' में एकर इसारा कयले हथ, 'परसाल 'बंगला के उत्पत्ति और विकास' में मासूक के लिक्खा धिक्कार पढ़ला से हम ठान लेलूं के नुकल रहला से अब बने के नै, छौ पाँच करते करते जिन्दगी बेकाम कैले खतम हो जाए के हे।' संगे-संग एहो कहलन कि भाषा-साहित के काज करे से अजादी के आंदोलन में उनखर जे भूमिका हइ, ओकरा से ऊ जरिको पीछू नयं हटतन, 'ई न कि स्वराज हासिल करे में हम रूक रहब, मगर हमनी के साथे-साथे ई भी कोसिस करे के होत के उदंड सूर्ज के डूबे के पहिले मगही अपन जगह पर कायम हो जाए।'[7] मने कि जयनाथ बाबू, जइसन कि हम्म पहिले कहली, मायभासा आउ मायभूमि के मुकति, दुन्नो के जुदा-जुदा नयं देखलथी।

साइत 1927 के आखिर में ऊ पहिला मगही कहानी 'सुनीता' लिखलन जे 1928 के सुरुआत में छपलइ। कहानी बहुत बड़ त नयं हल प साहितकार लोग एकरा उपन्यास के श्रेणी में रखलकिन। छपते ही 'सुनीता' के मगही समाज हाथेहाथ लेलक आउ एकरा प खूब 'टनमन' भी भेल। काहे कि एकरा में बड़ जात के जनाना आउ छोट जात के परेम दरसावल गेल हे। सुनीत बड़ जात के लइकी हे जेकर बियाह एगो बूढ़ से हो जा हे। सुनीता के ई बेमेल संबंध पसिंद न हे। से ले ऊ सामाजिक बंधन के परवाह न करके छोट जात के अदमी से सादी कर ले हइ। जेकरा ऊ बालपन बेरा से ही पसिंद करऽ हल। सुनीता के जात-बिरादरी ओला के ई संबंध कइसे बरदास्त होतइ हल। ओकरा आउ ओकर परेमी दुन्नो के समाज के लोग कोर्ट में खींच लैलखिन। बकी सुनीता जरिको न डेरयलक। मजगूती से मोकदमा के सामना करलकइ आउ बिजयी होके के निकललक।

अप्पने सब्ब समझ सकऽ हियइ कि 1920 के दशक में अइसन लिखना केतना 'क्रांतिकारी' हलइ। जोन जमाना में जनाना लोग के दूरा-दलान से बाहरी झांके के भी इजाजत न हल, से घरी जयनाथ बाबू के 'सुनीता' बूढ़ मरद के तेयाग के जेकरा से ऊ पेयार करऽ हल, ओकर हाथ धर के घर के से बहरा गेलइ। अइसन हिमतगर करे आउ सामाजिक वर्जना के तोड़े ओला जनाना चरित्र से घरी के हिंदी आउ दोसर भारतीय भाषा के साहित में भी मिलना मोसकिल हे। हलांकि बिदमान सुनीति कुमार चटर्जी के मोताबिक एकरा में नायक-नायिका के चरित्र चित्रण आउ ओकर बिकास ठीक से न होयल हलइ। अपसोच के बात हे कि समय से दू गोड़ आगे राह देखवे ओला

मगही के ई सामाजिक औपन्यासिक कृति 'छपित' आने कि दुरलभ आउ अप्राप्य हो गेल। मगही भासा-साहित के कोय आधुनिक लिखवैया के एकर प्रति देखे के जोग न भेलक।

कपिलदेव बाबू एकरा बारे में कहले हथन, 'साहित्य' (अंक-जनवरी, 1952) में ही हमने 'मगही भाषा और साहित्य' शीर्षक अपने निबन्ध में जयनाथपति कृत मगही के प्रथम उपन्यास 'सुनीति' का उल्लेख किया था। इसकी सर्वप्रथम सूचना हमें श्री सुनीति कुमार चाटूर्ज्या से प्राप्त हुई थी। उनके अनुसार जयनाथ जी ने उन्हीं के नाम पर इस उपन्यास का शीर्षक रखा था। उनके इस प्रयास से वे सहमत नहीं थे, क्योंकि इस नाम में उन्हें अभिजातीयता की गंध मिलती थी। 'सुनीति' का कथानक नवादा अञ्चल से सम्बद्ध था अतएव इस के नाम में भी वहाँ के ठेठ ठाठ की ही अभिव्यक्ति उन्हें अपेक्षित थी। इसकी समस्या जैसे असामान्य-विवाह इत्यादि भी उनके रुचि के अनुकूल नहीं थी।'[8]

'फूल बहादुर' जयनाथ बाबू के दोसर उपन्यास हे। एकर परकासन भी 1928 में ही होयल हे। पेशा से इंजीनियर आउ मगही भाषा, बेयाकरन आउ साहित के जोगवे आउ समरिध करे ओला नारायण प्रसाद ई उपन्यास के अंतरजाल प प्रस्तुत कयले हथ। उपन्यास के ई-प्रति विश्व साहित बिरादरी के सौंपते अप्पन ब्लॉग प ऊ लिखले हथन- 'फूल बहादुर' मगही के पहिला उपन्यासकार जयनाथ पति के लिक्खल पहिला उपलब्ध उपन्यास हकइ। ई उपन्यास के उनखर 'मुख बंध' से पता चलऽ हइ कि ऊ अप्पन जीवन में कइए गो मगही रचना के प्रकाशित करवावे के योजना बनइलका हल। लेकिन धन के अभाव में अइसन नयँ कर पइलका। मगहियन बन्धु आउ मगही में रुचि रक्खेवला अन्य लोगन खातिर मगही के ई पहिला उपलब्ध उपन्यास अन्तरजाल पर प्रस्तुत कइल जा रहले ह। ई बात के पूरा-पूरा प्रयास कइल गेले ह कि मूल पहिला संस्करण में प्रयुक्त वर्तनी (हिज्जे) जस के तस बरकरार रहे।'[9]

'सुनीता' में सामाजिक रूढ़ि प चोट हल त 'फूल बहादुर' औपनिवेशिक भारत में व्याप्त आरथिक भ्रष्टाचार आउ लैंगिक शोषण के उधेड़ल गेल हे। लिखवइया के तिल भर भी सहानुभूति नैतिक रूप से पतित आउ भ्रष्ट हो गेल समाज बेबस्था प नयं हइ। से ले ऊ अप्पन लेखनी में कोय मरउव्वत न करऽ हे। बात बना-बना के नाउ नियन दिल-दिमाग आउ मुड़ी छिल्लऽ हे। चुभे

व्यंग्य आउ हास-परिहास शैली में लिखल ई उपन्यास अलबत्त हे। पद आउ नाम के ललसा में अदमी केतना नीचे गिर जा हे एकर खूब बेस बरनन कयले हथ जयनाथ बाबू ई उपन्यास में। रामलाल जे बिहारशरीफ में मोख्तार हे ऊ अधिकारी सब्भ के सुरा-सुंदरी उपलब्ध करा के रायबहादुर बने के कोसिस करऽ हे। हर रकम के भ्रष्ट काम करऽ हे रायबहादुर के खिताब हासिल करे लेल ऊ। बकी तइयो रामलाल रायबहादुर बने से रह जा हे, हां 'फूलबहादुर' आने कि 'मूर्खबहादुर' जरूर बन जा हे।

ई उपन्यास के दोसर खास बिससेसता हे जनाना लोग के दुरदसा के चित्रण। रायबहादुर पदवी लेवे खातिर रामलाल एगो 'कसबी' नसीबन के उपजोग करऽ हे। नसीबन कसबी याने कि बेस्वा-पतुरिया हे। नाच-गान के पेशा करे ओली। एकरा माध्यम से जयनाथ बाबु 'सुनीता' नियन ही भारतीय जनाना बरग के बड़ मारमिक तस्वीर पेस कयले हथन।

जयनाथ बाबू के तीसर औपन्यासिक कृति 'गदहनीत' हे। एकरा में भी सामाजिक बुराई प परहार कयल गेल हइ। ई रकम हम्मनी देखऽ ही कि जयनाथ बाबू अप्पन तीनों मगही रचना में सामाजिक-राजनीतिक बिसय के उठयले हथ आउ बड़ी हिमतइ से कलम चलयले हथ। समाज-देस जोन बीमारी से ग्रस्त हे, ओकर ईलाज करे में ऊ पक्कल सरजन आउ सिरजनकार के भूमिका से जरिको नयं पीछू हटलन। हलांकि ऊ मगही के पहिल लिखवइया हलन। जयनाथ बाबू जे उसूल तीनों कृति से दे गेलन, अपसोस हे कि आझ के मगही साहित ओकरा से ढेर पिछुवा गेल हे। मगही समाज आउ साहित ओहे करमकांड से जंतायल हे, जेकरा से बचवे लेल ईसापूर्व 600 सदी मक्खलि गोसाल 'आजीवक दर्शन' के अलख जगयले हलन।

'फूलबहादुर' उपन्यास के हम्म एहे बिस्वास से अपने सब्भ के सौंपइत ही कि मगही साहितकार खंडन-मंडन करे ओला मक्खलि गोसाल[10] आउ जयनाथ पति के बनवल 'मग्ग' (राह), जे 'मग्गह' के मूल जीवनदर्शन हइ, ओकरा दन्ने फिन से ताके के कोसिस जरूर करतन।

जोहार।

अश्विनी कुमार पंकज

संदर्भ :

1. अशोक प्रियदर्शी, हस्तलिखित अखबार निकालते थे मोख्तार जयनाथपति : http://asbmassindia.blogspot.in/2012/02/blog-post_4479.html, गुरुवार, 9 फरवरी 2012, अभिगमन तारीख 12 जनवरी, 2018

2. ओही

3. देखल जाय 'फूलबहादुर' के 'परिछन'

4. द मॉर्डन रिव्यू, 1937, पृष्ठ 33 आउ 'स्प्रीचुअल बास्टर्ड एंड इंटेलेक्चुअल पैरासाइट्स' (प्रमेश चौधरी), ओम पब्लिकेशंस, 2011, पृष्ठ 61

5. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, 'द मॉडर्न रिव्यू', अंक 43, अप्रैल 1928, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पृष्ठ 430

6. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, ऋतम्भरा, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1958

7. देखल जाय 'फूलबहादुर' के 'मुख बंध'

8. कपिलदेव सिन्हा, मगही का आधुनिक साहित्य, खंड 1, पारिजात प्रकाशन, पटना, 1969

9. नारायण प्रसाद, भूमिका, फूलबहादुर, ई संसकरण

10. बिस्तृत जनकारी लेल देखल जाय अश्विनी कुमार पंकज के लिखल मगही उपन्यास 'खाँटी किकटिया' (प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन, रांची, 2018)

परिछन

मगही के पहिला उपन्यास लिखताहर श्री जयनाथपति के दूसर उपन्यास 'फूल बहादुर' के नया संस्करण पाठक लोग के हाथ में रखइत हमरा बड़ी आनन्द हो रहल हे। एकर पहिला संस्करण बइसाख, 1985 वि॰ (अप्रील 1928 ई॰) में निकलल हल। अप्रील के पहिला दिन बिलाइती सभ्यता में 'फूल्स डे' (मूर्ख दिवस) मनावे के चलनसार हे। उपन्यास के नायक के पहली अप्रील के बेकूफ बनावल गेल हल आउ 'रायबहादुर' के पदवी के फेरा में उनका 'फूल बहादुर' (आनेकि 'बेकूफ बहादुर') के पदवी मिल गेल हल। एही से ओही अप्रील महिन्ना में ई उपन्यास के फिर से छाप के हमरा बड़ी संतोष बुझा रहल हे।

उपन्यास के मूल छपल प्रति पहिले तो बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, के श्री राधावल्लभ शर्मा से मिलल, बाकि ओकरा में एक पन्ना फटल हल आउ कई जगह दीयां चाट गेल हल, आउ सुरू वाला चार पन्ना 'मुख-बंध' भी गायब हल। ई कमी के पुरती कयलन मगही के महाकवि श्री योगेश्वर प्र॰ सिंह 'योगेश' जी अपना पास के मूल प्रति देके। हम ई दुन्नो सज्जन के बड़ी आभारी ही कि इनकनिए के मदद से ई उपन्यास फिर से छप के अपने लोग के हाथ में पहुंच सकल।

'श्री जयनाथपति मोख्तार के जनम सन् 1880 ई॰ में नवादा (गया) के सादीपुर गांव में भेल हल। सादीपुर गांव कादिरगंज के नगीच हे। इनखर पिताजी के नाम श्री देवकी लाल हलन।...पढ़े में खूब जेहनगर हलन। ई आई॰ ए॰ पास करके मोख्तारी के इम्तिहान पास कइलन। नवादा में इनखर मोख्तारी खूब चलल। इनका संस्कृत, अंगरेजी, महाजनी, बंगला आउर लैटिन भासा के जानकारी हल; उर्दू-फारसी के तो पारंगते हलन। धर्म-चर्चा में खूब दिलचस्पी हल। गांधीजी के सुराज आंदोलन में भी भाग लेलन। सन् 1931 ई॰ में नमक-कानून तोड़े के ओजह से ई कोट में बंद कर देल गेलन। पहिले रेभेन्यू केस में मोख्तार सब बहस नय करऽ हलन, इनखे कोरसिस से मोख्तार सब के रेभेन्यू केस में बहस करे के अधिकार मिलल। बिहार भर के मोख्तार इनका ऊंचा अस्थान दे हलन। सन् 1940 ईस्वी में इनखर मिरतू भेल।

वारिसान में तीन लड़की आउर एक-लड़का रहलन।'[1]

जयनाथपति मगही के हिन्दी-बंगला के बराबरी में खड़ा करेके सपना देखऽ हलन। एकराला उनकर मन में ढेर किताब लिखे, लिखवावे और छापे-छपवावे के हल। लगऽ हे, अपन जिनगी में ऊ जादे कुछ न कर सकलन, बाकि अपन चार किताब तो छपवैलन, एकर सबूत मिलऽ हे। पहिला उपन्यास हल 'सुनीता'। एकर नामकरन बंगला के विद्वान आउ बिस्व-बिख्यात भाषा-शास्त्री श्री सुनीति कुमार चटर्जी के नाम पर कयल गेल हल काहेकि उनके किताब 'बंगला की उत्पत्ति और विकास' से मगही के जिआबे-जगावे के परेरना मिलल हल। अभी तक 'सुनीता' के मूल प्रति न परापित भेल हे, जइसहीं मिलत ओकरा हम मगही पाठक के सन्मुख रखे के जतन करम।

'सुनीता' के कथावस्तु के बारे में डा॰ सुनीति कुमार चटर्जी के कहना हे कि हमरा इ उपन्यास के वातावरण बेस न लगल। उ में कहल गेल हल कि एगो बाभन लइकी दोसर जात के जुआन के साथ ई गुने निकल गेल हल कि उ दुनों में प्रेम हल। सोभाविक हल कि बाभन लोग एकरा से रंज भेलन आउ जब उ प्रेमी के खिलाफ फौजदारी मोकदमा चलल तो नाइका उनकर कार्रबाई ला एगो जोसीला भाषन देलक आउ छूट गेल। अइसन कहानी उ समय फरक-फरक जात के बीच वैमनस्य पैदा करत हल, आउ हम ओकर सिखउनी वाला टोन के भी पसीन न कइली काहेकि, हालांकि हमरा पक्का इयाद न हे - उ लइकी एगो पुरनिया के घरनी हो चुकल हल।'[2] इनकर तेसर रचना हल 'गदहनीत'। चउथा हल 'स्वराज्य' जेकरा में 1936 के भारत सरकार के कानून मगही में लिखल हे।[3] इ तीनों किताब के छपल प्रति मिलइत पाठक लोग तक पहुँचावे के जतन कयल जायत।

'फूल बहादुर' के पहिला संसकरण क्राउन साइज के 4- पेज में छपल हल। जिल्द पर एगो जोकर के तस्वीर हे जे हैट-बूट पहिनले दहिना हाथ से घंटी डोलावइत हे आउ बामा हाथ में आदमकद साइज के कागज लेले हे जेकरा पर 'फूल बहादुर' बड़ा हरुफ में लिखल हे। तस्वीर के उपरे लिखल हे (लड़कन और औरत ले नै), तेकरे नीचे (मगही के दूसरा उपन्यास)। तस्वीर के नीचे - लिखवैया जयनाथ पति। कीमत (तीन आना)। उपरकी लाइन से ई साफ बुझा हे कि जउन जमाना में ई उपन्यास लिखायल हल ऊ घड़ी लइकन आउ औरत लोग के उपन्यास के पढ़ना बरजनी हल; काहेकि एकरा में कोई

अइसन अस्लील बात न लिखल गेल हे।

डा॰ सुनीति कुमार चटजी 'फूल बहादुर' के मजाकिया व्यंग (सटायर) कहलन हे। बिहारशरीफ के मोख्तार साहेब सामलाल बड़ा धुरफंदी हलन। इनका पर रायबहादुरी के जनून सवार हो गेल हल। नया एस॰ डी॰ ओ॰ नवाब साहेब अयलन तो उनकर चमचागिरी करके आउ मन मोताबिक पतुरिया सप्लाई करके अपन मनकामना पूरन कयल चाहलन। बाकि उनका फलिहत न मिलल, आउ राय बहादुर के बदले में पदवी मिल गेल 'फूल बहादुर' के। एही एतना कथा के ताना बाना में ऊ घड़ी के कचहरी आउ सरकारी अफसरान में फैलल भ्रष्टाचार पर बड़ी करारा चोट कयल गेल हे, हंसिये मजाक में।

एतना तो इंसाफ हे कि ई उपन्यास मगही भाषा में होय पर भी एकरा पर आंचलिकता के कोई छाप न हे, एकरा में जउन समाज के तस्वीर उरेहल गेल हे उ बिहारशरीफ इलाका के गंवइ समाज न हे, बलुक सहरुआ समाज हे, ओहू पूरा न हे खाली कचहरी के चारों तरफ चक्कर काटऽ हे। कहीं इहां से बाहर निकलल तो पतुरिया के गली तक पहुंच के लौट आयल, बस।

लगऽ हे, जयनाथ पति जी अपन मोख्तारकारी के अनुभो के आधार पर ई उपन्यास रचलन हल। एही से कचहरी के कारनामा के कच्चा चिट्ठा बड़ी खूबी से खोल के रख देलन हे। एस॰ डी॰ ओ॰ नवाब साहेब के मुंह से कचहरी के कारबार में सुधार के उपाय भी बतौलन हे, जे बड़ा सटीक हे। मगही समाज के आंचलिक तस्वीर के झलकी ऊ अपन पहिलका उपन्यास 'सुनीता' में देखा चुकलन हल। तो 'सुनीता' आउ 'फूल बहादुर' दुनो मिल के ऊ इलाका के सहरु आउ गंवई तस्वीर पूरा करऽ हे। उपन्यास पढ़ला पर ई कहल जा सकऽ हे कि 'फूल बहादुर' पात्र प्रधान समस्यामूलक व्यंग हे। उपन्यास कला के नजर से एकर परिछन सुधी विद्वान लोग करतन।

भाषा आउ लिखावट में भी इनकर प्रयोग देखल जा सकऽ हे। 'अध्याय' के बदले 'अध्या' आउ 'प्राक्कथन' के जगह पर 'मुखबंध' सबद मगही में उनकर देन हो गेल। 'समालोचना' सबद ला 'परिछन' तो निछक्का मगही हो गेल। मगही लिखे में एक समस्या हरदम सामने आवऽ हे कि सबद के अकारांत अच्छर पर जे दीर्घ स्वर होवऽ हे ओकरा कइसे लिखल जाय। हमनी तो बिकारी - (ऽ) देके काम चलावऽ ही, जइसे 'कहऽ', 'चलऽ'। जयनाथपति

जी एकरा ला अंतिम अच्छर के पहिले हाइफन से काम चलौलन, जइसे 'क-ह', 'च-ल'।

पुस्तक के संपादन घड़ी कहीं-कहीं कुछ सुधार करे पड़ल हे, ओकरो बता देना उचिते होयत। पहिला छपाई में पूर्णविराम बहुत कम जगह पर देल गेल हे, जेकरा से, पढ़े में भी उसकुस होवऽ हे आउ अरथो लगावे में मोस्किल पड़ऽ हे। ई लेल जहां उचित समझल गेल, पूर्णविराम लगा देल गेल हे। पुस्तक के सुरू में उल्टा कौमा ('-') के इस्तेमाल भेल हे, बाद में छोड़ देल गेल हे, संपादन घड़ी उल्टा कौमा एकदम्मे हटा के एकरूपी बना देल गेल हे। अइसने एकरूपताई लागी जहां-जहां 'अै', 'अे', के परयोग भेल हे, उहां 'ऐ', 'ए' बना देल गेल हे। हिज्जे में भी बहुत गड़बड़ी हल। एक सबद के कई तरह से लिखल गेल हल। ई संस्करण में ओही हिज्जे रक्खल गेल हे जे जादे उचित बुझायल। जइसे कहीं 'ख्याल' लिखायल हे, तो कहीं 'खेयाल'। मगही के परकिरती के मोताबिक 'खेयाल' के ठीक मानल गेल हे आउ ओइसने सुधार कर देल गेल हे। तइयो जउन सबद के एक्के हिज्जे पूरे किताब में रखलन हे, ओकरा बदले के कोरसिस न कयल गेल हे, जइसे 'बाकि' के बदले 'बाकी'।

मगही के ई छेयालिस साल पुरान उपन्यास फिर से छपल एकरा ला श्री लक्ष्मी पुस्तकालय के मालिक, मगही प्रेमी परमेश्वर प्रसाद के आभार न भुलावल जा सके जे अपन घनश्याम प्रेस में एकरा 'बिहान' के अप्रील-मई (1974) के जोइयां अंक आउ किताब के रूप में छपवावे के किरपा कयलन।

राम नन्दन

पटना : अप्रील, 1974

---

1. 'योगेश'; श्री जयनाथपति : मगही के पहिला उपन्यासकार, 'बिहान', अंक 10, बरीस 8, दिसम्बर 1967, पृ॰ 2
2. डा॰ सुनीति कुमार चटर्जी, 'चिठियांव-पतियांव' में लिखल अँगरेजी चिट्ठी के उल्था, 'बिहान', बरीस 13, अंक 2, फरवरी, 1974, पृ॰ 29
3. योगेश, ऊपरकी, पृ॰ 3

मुख बंध

'सुनीता' के जैसन आदर से पाठकगन अपनैलका हे और श्रीयुत् सुनीति कुमार चटर्जी जैसन प्रेम से ओकरा अंग्रेजी के नामी मासिक पत्र में1 परिछन कैलका हे, ओकरा से उत्साह हमर जरूर बढ़ गेल हे। हम सम-झ ही कि उनकर कृपा मगही पर से घटत नै, और इहे सोंच के हम फिर दूसर पुस्तक के साथ उनकर भीरी हाजिर होलूं हे। कमी और गलती जरूर इ सब में हे और यथासक्ति उ सब के हटावे के कोसिस भी कैल जात।

कुछ भूमिहार भाई एकरा से रंज हो गेला हे कि उनकर जात भाई के नकल 'सुनीता' में बनावल गेल हे। उनखा से हमर अर्ज हे कि हमर हरगिज ऐसन नै ख्याल हल नै हे। बुराई जे ओकरा में दरसावल गेल हे, उ फैलोल हे, एकरा में सक नै, और ओकर निन्दा भी करे के चाही, एहो निसन्देह। तो फिर कोए जात के तो एकर भाव सहे होत। फूल बहादुर में दे-ख, हमर एक लाला भाई गोबर्धन उठऔलका हे। और कुछ दिन बाद 'गदह नीत' में और केकरो चौनमारी के खम्भा बने होत।

परिछन में तो हमरा जादे उमीद भांड़ी के हल, लेकिन प्रथम मिलन के प्रेम के प्रवाह में सायद हमर भाषा-संबंधी उ सब के भूल गेला और बड़ी खूबसूरती से अपन भाव हमरा संकेत से कह देलका हे। ओकरा मोताबिक अपन मातृभाषा के सजे-धजे के ख्याल हमरा आज 20 बरस से हे, लेकिन धन काफी नै रहला से ओकरा करके नै देखला सकलूं। किताब सैंकड़ों लिखल पड़ल हे और बहुत से के लिखकर पूरा कर देवे के सामान तैयार हे, बाकी छपे कैसे? परसाल 'बंगला के उत्पत्ति और विकास' में मासूक के लिक्खा धिक्कार पढ़ला से हम ठान लेलूं के नुकल रहला से अब बने के नै, छौ पाँच करते करते जिन्दगी बेकाम कैले खतम हो जाए के हे। एहे से तीन चार दिन में 'सुनीता' लिख के छापाखाना में भेजल गेल, और एतना जल्दी में उ छपल के पूरा तरीका से ओकर प्रूफ भी नै ठीक कैल जा सकल। लेकिन अधिक कृपा के कारण लोग एकर सिकायत नै कैलका हे। दबल मुंह से इ कहल गेल हे कुछ अच्छा वार्ता से सुरू कैल जात हल, तो एकरा में उजुर हमरा एतनै कि

1. Modern Review for April 1928, p- 430

हमर मातृभाषा के बैठे के जगह भी नै हे, मगर, अब जब हम ओकरा अपन और बहिन समान करे के खेयाल से खड़ा होलूं हे, तो पहिले झाड़ू-बहाड़ू तो करना जरूर हे। आस पास वालन के गर्दा पड़त तो सहयोगी के धर्म कुछ सहे के हे, और हमरा ई बात से बड़ी खुसी हे कि उ अपन धर्म के पूरा तौर पालन कैलका। उ सब जे जरी 'ओः' क-र हथ, से उनखा सन्तोख देवे ले हम ई कहे ले चाह-ही कि अबरी भर हो गेलो। अबसे पानी छींट के बहाड़वे और 'गदहनीत' में केकरो असकुस नै मालूम होत, और जेहे में हमर मातृभाषा सुसज्जित हो जाए हम नीचे लिखल किताब छपावे के कोसिस करबे :--

1. **पांच हजार बरस के फूल में सुगन्ध** - (मतलब ऋग्वेद के काव्य के खेयाल से उमदा मंत्र के मगही में तरजुमा। साथ-साथ उ सबपर जर्मन, फ्रांसीसी, अंगरेजी, और संस्कृत व्याख्या के तुलना)
2. **मगही रामायन** - (ई हमरा दने बहुत दिन से प्रचलित हे, हम एकरा लिखा रहलूं हे)
3. **साढ़े तीन हजार बरस के सुगन्धित फूल** - (पारसी गाथा के मगही तरजुमा ऐसन। एहो तैयार हो रहल हे)
4. **मगही महाभारत**
5. **मगही भागवत** (तैयार हे)
6. **मगही के भाषा-वैज्ञानिक तत्व**
7. **मगही में बूढ़ी मम्मा** (प्रचलित खिस्सा के संग्रह)
8. **मगही कहावत** (एक बंगाली भाई जौर कैलका हे)
9. **भारतवर्ष के पुराना हाल** (अपना खोज के मुताबिक)
10. **मगही कोरान**
11. **महम्मद साहब के जीवनी**, इत्यादि

बहुत से हमर जिन्दगी में खतम नै होत, एकरा ले हम कुछ धन बंक में कर देबे ले ही कि कुछ दिन के बाद जब सूद दर सूद काफी रकम हो जाए तो जे एकर पंच होता उ मगही भाषा जे तखने प्रचलित रहत ओकरा और और भासा के बराबर अलंकृत करे के कोसिस करता। बंगला, हिन्दी, 100-50

बरस में बढ़ गेल हे। मगही के जादे दिन लगत? हमरा डर एक बात के हल के हिन्दी (या खिचड़िया हिन्दुस्तानी) मगही के लोप नै कर दे। मगर अंगरेजी राज रहते पूरा तौर से पढ़ाए के इन्तजाम नै हो सके हे और एकरे से उमीद हे कि अनपढ़ मगही अपन भासा के नै भूलता। एकरा से ई न कि स्वराज हासिल करे में हम रूक रहब, मगर हमनी के साथे-साथे ई भी कोसिस करे के होत के उदंड सूर्ज के डूबे के पहिले मगही अपन जगह पर कायम हो जाए।

ज॰ प॰

नवादा
मि॰ 3 बैसाख सं॰ 1985 वि॰

फूल बहादुर

1928

जोंक से जादे खून चुसबैया

अध्या 1

बिहार सरीफ में बाबू सामलाल बड़ा मोखतार हला बाकी इ बड़ा बहुत नीचता के बाद होला हल। पहिले इ बड़ी गरीब हला। बाबूजी गाड़ीवानी क-र हलथिन, और इनकर फुफा, गुरुऐ क-र हलथिन और उहे इनका मिडिल पास करैलथिन। पीछ इ बिहार में एक मोखतार के यहां रसोईगिरी करके मुखतारकारी के इमतिहान देलका और इ तीन लोघड़नियां के बाद पास कर गेला। आदमी होसियार हला और धुरफंदी। कुछ ऊंच-नीच तरीका से मोखतारकारी चला लेलका। महल पर एक गरीब कायथ के कुछ रुपया करजा देलका हल, सूद मूर लगाके ओकरा से मकान लिखा लेलक और थोड़े दिन में दुमहला मकान आलीसान बनैलका। ओहे कायथ सुगनलाल फेर रसोइआ के काम करे लगलैन। ऐसे तो करीब-करीब सभे सरकारी काम करे वाला थोड़े बहुत खोसामदी होवे क-र हथ। इ तो मुसलमानी वादसाहत और हिन्दुस्तान के गुलाम के फल हे। बाकी इनका में एकर मातरा कुछ जादे हल और हाकिम वगैरह के खूब खोस एकरे से र-ख हला। बाकी ऐसन काम में बगैर चुगलखोरी के बढ़ती नै होवे हे एकरे से सहर के रईस इनका से कुछ कौंचल र-ह हला। सन् १३२६ फ० के चैत में मोलवी मोजफ्फर नवाब एस-डी-ओ मानभूम से बदल के ऐला और हलधर सिंघ सब-डिपटी एक बरस कवले से हला। एने कुछ दिन से साम लाल के जनून राय बहादुर होवे के चढ़

गेल हल। एकर काबिल तो उ जा-न हला के हम नै ही बाकी अपन धुरताई पर उनका भरोसा हल। आवे के जहिना खबर हल सामलाल किउल स्टेसन एक रोज पहले तेकरा से पहुँच गेला और केलनर के हिआं चाय पानी के बन्दोबस्त कर देलका और सात बजे सांझ के जब नाब साहेब गाड़ी से उतरला के बखतिआरपुर के गाड़ी में सवार होवथ पहुंच के आदाब बन्दगी कैलका और अपन निसान पता बतैलका और बोलला के पच्छिम के गाड़ी आवे में अभी देर हे, जबतक चलके नास्ता पानी कर लेल जाए। नवाब साहेब बोलला के अभी खाहिस नै हे। तब ई बड़ी आरजु मिनती कैलका के कल्ह से हम हजुर एहां ऐलूं ह और इन्तजाम कैलूं ह। नवाब साहेब भीतरे भीतर तो कुछ अजब ऐसन समझथ मगर रईस घरैना के रहला के वजह से रूख से बात नै कर सकथ। बोलला (उर्दू में) -

अखने माफ क-र।

साम - नै हजुर।

नवाब - बैठले तबीयत परेसान हो गेल हे, खैलूं हे से पचल नै ऐसन बुझा हे।

साम - (एने ओने देखके औ तब जरिसे पैर छूखे) हमरा पर खाबिन्दी कैल जाए।

नवाब साहेब के ढेर खोसामदी से भ.ट होल हल बाकी ऐसन खाहमखाह तो कोई नै मालूम भेल। आखिर में समझलक के इ नै मानत, एते दूर से आल हे। एकरा नाराज करना भी आदमियत से बाहर समझ कर बोलला (उर्दू में) - च-ल।

आखिर केलनर के कमरा में दुनु गेला और खिदमतगार गैरह के चीजबस्त देखते रहे कह देलका। खानसामा तीन-चार टुकड़ा बिसकुट और चाय औ अण्डा गैरह हिसाब से ला-ला के नवाब साहेब के भीरी रखे लगल और मोखतार साहेब टेबुल के दूसर तरफ बैठला।

नवाब साहेब बोलला (दर्दू में) - अपने के भी लाके द।

खानसामा - जे हुकुम।

मोखतार साहेब चट से हाथ जोड़ के बोलला - (उर्दू में) - माफ कैल जाए।

खानसामा थथम गेल।

नवाब - नै, ई तो तब किरकिरा हो जात।

साम - नै, हम बीसनो ही।

नवाब - ओह, बीसनो असल दिल से होवे चाही।

साम - नै हुजुर, बड़ा मोसकिल है।

नवाब - अच्छा, कुछ फल-वल लाके दे भाई। औ हिन्दू चाय वाले को बुला लाओ।

साम - जी हां।

खानसामा तब जाके कुछ केला वो केवला ले आल और हिन्दू चाय वाला के बोला के दू प्याला चाय अलग दूसर टेबुल पर रखलक और केवाड़ी लगैते चल गेल।

खैते-खैते नवाब साहेब पुछलका - क-ह बिहार कैसन जगह हे?

साम - बहुत पुरान जगह औ बहुत अच्छा जगह है।

नवाब - मोखतार सब?

साम - अच्छा हथ।

नवाब - वकीलो र-ह हथ?

साम - जी हाँ।

नवाब - वकील सब और मोखतार सब में बनाओ हे?

साम - हे, बाकी मोखतार सब के आपसे में बिगाड़ जा हे।

नवाब - काहे?

साम - एहे हसद।

नवाब - से की?

साम - अब जैसे हमरे से सब खार खा हथ। हमर किला ऐसन मकान हे, सब के इ अच्छा न लगे। हमरा दस पांच हजार बैंक में हे, सब चा-ह हथ कि उनको रहत हल। हाकिम सब जैसे हमरे मा-न हथ, एहे सबसे।

नवाब - अनेरी मजिस्टर सब?

साम - हथ।

नवाब - उ सब कैसन हथ?

साम - सब जैसन और जगह र-ह हथ।

नवाब - से की?

साम - अब उ सब हाकिम हका, उ सब के बात हमरा से की पुछल

जा हे।

नवाब - तु ऐसन खेयाल मत क-र। हमरा वजह से तोहरा कुछ नोकसान नै हो सको हो। बो-ल।

साम - अब हुजुर कह-ह तो हम की बतलाउं। दु-तीन के छोड़ के औ सब बड़ी रुसबत ले हथ। पेसा खड़ा कर लेलका हे।

नवाब - सब कैसन आदमी हथ, जीमींदार तो?

साम - पढ़ल-लिखल ग्रैजुएट के तो ठेकाने नै औ इ-सब थोड़े बहुत पढ़ल सब जे बराबर जीमींदारी में दस रुपया एकरा से लेलका तो एकर ऐसन इनसाफ, पांच रुपया ओकरा से बेसी सलामी मिल गेल तो ओकरे ऐसन इनसाफ। ऐसन सिलसिला के खेयाल वाला के हजारों दस हजार के हैसियत वाला के इज्जत के मोकदमा फैसला करे ले मिले हे, तो सौ-पचास कभी चढ़ावा कभी नगद अगर उ सब में केकरो के आमद हो जा हे तो कौन मना।

नवाब - तो एसडीओ गैरह एकरा नै जा-न हथ?

साम - जा-न होता कैसे ने?

नवाब - तब काहे उ सब के मोकदमा दे हथ और रहे दे हथ?

साम - एक मरतबे गुड़ीआर साहब ऐला हल तो एकदम बंदे मोकदमा देना कर देलका हल। फेर सब बड़ा खोसामद उसामद कैलका। छोटा मोटा मोकदमा भेजल जाए लगल। उ गेला तो फेर ओही बात।

नवाब - बहुत खराब हे न तब। पुलिस औ अमला में रूसवत जुलुम हइये हे अब हाकिमो ई बात, तो सलतनत के जड़ में दीयां समझे के चाही।

साम - हम नइ कह स-कही।

नवाब - हां अं-अं। चाय खतम करके और रूमाल से मुँह पोछ के बाहर निकलला और नौकर के बिल देख के चुकती करेला कहलका।

साम लाल बोलला - नै, एकर जरूरत नै हे। ओकरा सब देल हे। ओकर बाद पलाट फारम पर टहल-टहल के बात करे लगला।

नवाब साहेब - (उर्दू में) - सु-न, हमरा बड़ी दुख होल एहां के हाल सुन के।

सामलाल - हुजुर, हमर सब दोस्त हका, उखनी पर ऐसन-ने के कोय सखती होवे।

नवाब - नै, हम केकरो बुराई ने क-र ही। सु-न, हम बादसाही खानदान

के ही।

साम - जी हाँ।

नवाब - वाजदली साह मरहूम हमर नजीकी मुरीस।

साम - जी हां।

नवाब - हमर परनाना उनकर अपन मौसेरा छरनाती।

सामलाल - ओ, (बे समझे बोलला, कुछ समझलका तो नई बाकी तरे तरे मुसकला, ऊपर से एकदम गम्हीर रहला)।

नवाब - कखनो कखनो हमरो खून उबल उठे हे। जौन बेईमानी से वादसाहत लेल गेल हे; तुरकी के साथ बेइमानी, फेर अरब में हमनी सब कमजोर आदमी, बाकी खुदा तो जरूर देखत।

सामलाल - जी हां।

गाड़ी आवे के वेला हो गेल। मोसाफिर सब दूसर पलाट-फारम पर अपन चीज वस्त ले जाए लगला। इ भी अपन नौकर के सब चीज लगे के नजीक ले जाइले कहलका।

अध्या 2

गाड़ी पहुँचल। सब मोसाफिर अपन चीज चढ़वे लगला औ अपने भी चढ़े लगला। नवाब साहेब के भी खानसामा चीज चढ़वे लगल। एकरे में एक डेवढ़ा गाड़ी में से कोई औरत सामलाल के सलाम कैलक और सामलाल बदली सलाम कैलका औ इसारे से बतला देलका के एही एसडीओ जा हथ। उ औरत तब दबक गेल, मगर नवाब साहेब एकरा देख लेलका बाकी अनदेख ऐसन करके गाड़ी पर सवार हो गेला। सामलाल भी वहे खाना में चढ़ला।

गाड़ी खुलल तब नवाब साहेब गदिए पर अड़ल अड़ल बोलला (उर्दू में) - तोहरा उ सलाम कौन औरत कैलको।

साम - उ बिहार के कसबी है। एक मरतबे दफा ६० के मोकदमा में हम ओकर काम कैलिए हल।

नवाब - बड़ा पुलिस सब भी बदमासी करे हे। जहां कुछ उनकर बात ने मानलक और दफा ६० के रिपोट दाखिल।

साम - नै एकरा में से बात नै हल।

नवाब - की?

साम - इ बात तो मोकदमा के हे। हमरा जरा बड़ा कैसन तो कहे में मालूम होवे हे।

नवाब - तूं बेखोफ र-ह। हमरा चलते तोहर नोकसानी कोए नै कर सको

हो। तूं बड़ी अच्छा साफ दिल आदमी ह और हम ऐसने आदमी के पसन्द क-र ही।

साम लाल - अब जे हुजुर क-र, हम तो हुजुर के हाथ में अपन जान देले ही।

नवाब - तूं बेखौफ र-ह।

साम - नसीबन एकर नाम हे और अभी एकर खुल्लम खुल्ली नथुनी ने उतरल हे। बाबू हलधर सिंघ वहां सिकिन अफसर हथ से एकरा कैसुं एक मरतबे देख लेलका औ केतनो बोलाथिन तो नै जाइन। तब उनकर दोस्त पहिले एक नितनेस्वर बाबू निस्पीटर हला उनके कहलका और तब पुलिस एकरा पर दफा ६० चलौलक और कोए कोए तरह से मोकदमा उनके इजलास में गेल। हमरा इ जानके के सिकिन अफसर इनकर दोस्त हथ मोखतार रखलक और हम कोई सूरत से रेहाए करा देलिऐ।

नवाब - ओह! (बड़ी खोस होके और उठके बैठके) तब तो तुं एकदम लाजवाब आदमी ह। हम तो समझलूं हल के एते दूर के सफर बड़ा सुखल साखल होत। तूं खोदा के देल मिल गेला।

साम - नै हुजुर, हम कौन काबिल ही।

नवाब साहेब हाथ बढ़ैलका और सामलाल भी अपन हाथ बढ़ा देलका। नवाब साहेब उनकर हाथ पकड़ के - तूं हमर दोस्त अपना के सम-झ।

साम लाल - जैसन हुजुर के खाबिन्दी। हम तो हुजुर के थूक के बराबर नै ही।

नवाब साहेब - तो एक बात, अगर बेअदवी माफ क-र।

साम लाल - हमरा हुजुर बड़ी लज-ब ही।

नवाब - जरा दे-ख न, नसीवन के एहीं बुला-ब, रास्ता में गप चलत। बाकी ओकरा से कहि-ह मत के हम एस-डी-ओ ही।

साम - (दुगमुगा के) अच्छा, तो अबरी टीसन में। बाकी कोई आदमी सेकिन अफसर के रहल तब?

नवाब - समझलुं (कुछ सुस्त होके) सेकिन अफसर के ताबे में हे?

साम - नै, ताबे में की रहत, फिर तो रंडिए हे। बाकी हां, जरा परदा से कोई बात होवे हे और अभी (चपस के) एकदम नवेली हे।

नवाब साहेब - तों एकदम बेताव हो गेला। अब ढेर मोसकिल मत क-र,

जल्दी जा।

साम - गाड़ी ठहरे तब न हुजुर।

मोकामा में गाड़ी ठहरल और साम लाल उतरके डेवढ़ा में गेला और नसीबन के चलैलका बाकी नखड़ा करे लगल और बोले लगल के हलधर बाबू सुनता तो जान से मार देता। साम लाल बड़ी ओकरा दिलासा देलका और किरिआ खैलका बाकी उ नै उतरल। मजबूरी उ नवाब साहब के पास ऐला। नवाब साहेब खखन्द से डेवढ़ा के पास उतर के टहल रहला हल। इ-सब सुनके उ तुरते दस रुपया के नोट देलका और कहलका के द जाके और नै माने तो कुछ आखिर में भू-भड़क भी देखलइ-ह।

कोए सूरत से नसीबन के साम लाल फस्ट किलास में ले ऐला। नवाब साहेब ओकरा डेवढ़ा से उतरते देख झट से अपन खाना में चढ़ गेला और गद्दी में अड़के एखबार देखे लगला।

नसीबन जब आल तो गम्भीरता से एखबार रख देलका और बोलला - ‘बै-ठ बी-जान।’ पंखा ऊपर के खोल देलका और रास्ता भर गप-सप चकल्लस करते चलला। गाड़ी अदलते बदलते जब दू-तीन टीसन बिहार पहुंचे के रहल तो नसीबन के अपन खाना में चला देलका।

अध्या 3

नबाब साहेब थोड़े दिन ऐला के बादे, अनेरी मजिस्टर के इजलास में मोकदमा भेजना कम कर देलका। खाली दफा '३४' या एकरारी दफा '६०' के मोकदमा कभी-कभी भेजल करथ और जेतना काम होवे अपने करथ या दुनु डिपटी के देथ। बाकी बाहर जाए के काम जादे बाबू हलधर सिंघ के देथ, एकरा में उनकर दुनु काम, लोक और परलोक सधे। दू तीन महीना तो कस-मस करके सिंघ जी कैलका बाकी अब बरसात आ गेल तो देखलका के जादे बाहर जाना तो मरे के उपाए हे।

एहे वास्ते एक रोज मौका देख बड़ा डिपटी साहेब के यहां ऐला और बात एने ओने के करके बोलला कि -

आझ काल सुराज के हल्ला से तो मोकदमा एकदम कम हो गेल हे, तइओ हमनी सब के जान परिसान रहे हे।

नवाब साहेब - एही जरा खास महाल के काम कुछ बढ़ल हे और तहकीकात सर जमीन के, से अब काम हो जात।

सिंघ जी - खास महाल के काम जे छोटा साहेब से हमरा देल गेल हे से तो उतना मोसकिल नै, बाकी सर जमीन पर हर मोकदमा में जाने बड़ा खराब हे। इ-सब तो पहिले अनेरी मजिस्टर सब क-र हला।

नवाब साहेब - नै, हम तो ठान लेलुं ह के जहां तक होए झगड़ाहु मामला

ई लूं सब के हाथ में नै देबे। बड़ा जुलुम गरीब फरिआदी सब पर होवे हे।

सिंघ जी - हां, ई बात तो एक तरह से खुलल हे बाकी दु-चार तो बड़ी इमानदार हथ।

नवाब - एहे तो मोसकिल। अगर उ-सब के देल जाए तो बाकी तो बड़ी दुःख मानता और एकदम उ सब के बेला सबूत के बेइज्जत करना होत।

सिंघ जी - तो ई कहां तक रोकल जा सके हे। तमाम तो रुसबत के बदबू होवे हे। अरे जब एकाक-ठो हाई-कोट के जज सब के अधखुलल सिकायत ई सब के हो रहल हे तो ई बेचारन के कौन ठेकाना।

नवाब - हमनी सब के उ-सबसे कोई मतलब नै, उ-तो सरकर जाने और बहुत जादे अतंत हो गेला से लोग सब खुद दबाय करता। बाकी छोटा दायरा में जे हमनी के अखतियार हे सेकरो में तो कुछ करना ईमान के बात है।

सिंघ जी - हमनी केतना की कर स-क ही। सबसे भारी जुलुम तो पुलिस के घूस। जेकरा में दसे बीस इया पचासे अच्छा इमानदार हका नै तो सब रैयत के बदन में जोंक से जादे खून चुसबैया। सरकार की एकरा नै जाने हे बाकी उ भी कुछ नै कर सके। कैसे रोके हे और हमनी सब की कर स-क ही।

नवाब - ई तो फजूल क-ह ह। एकरा में दुए बात, या तो जेकर हाथ में करे के हे से जाने हे ने और जाने हे तो रोके नै चाहे हे। डाकघर में दे-ख, कितना कम मुसाहरा सब के हे और केतना कम रुसबतखोरी। की वजह? तुं कह-ब के उ सब के अखतिआर कम हे। से तो एकदम ठीक नै, हरदम रुपये लेवे-देवे के काम, चीठी चपाती भेजे भेजावे के काम, एकरो में बहुत कुछ वसूल करवैया कर सके हे। बाकी एकरा में अफसर सब के जादे भरोसा पबलिक पर हे। जहाँ जरी से सिकायत होल, फौरन तहकीकात और सजाए। एकरे से खाली रोजी नै लेवे के खेयाल से कोई आदमी जल्दी सिकायत नै करे हे जब तक मजबूर नै हो जाए; और जो कोए गोसाहा तनी तनी बात में सिकायत करे हे तो और सब आदमी ओकरा मदद नै करे हे। और वहे सरकार के दहिना आंख के दे-ख। पुलिस पर कोए गुमनामी सिकायत होए तो ओकर कोए खेयाल नै, नाम धरे के होए तो अउअल दरजा के मजिस्टर तहकीकात करे और गवाह पूरा तौर से साबित करे। डर से जल्दी गवाही कोए नै दे। अपन आदमी दे तो बिस्वास नै, और दूसर आदमी दे तो जादे तर डर से, हमनी सब जे नै क-र ही। तो अगर डाकखाना ऐसन जनता पर भरोसा

कैल जाय तो काम नै चल सके हे? बाकी एकरा में सरकार के रोब उठ जात, मोहब्बत के पानी जो दरखत के जिन्दा नै रखत ओकरा रौब और रुसबत के कीड़ा कब तक बचावत?

सिंघ जी - अपने इ तो खेयाल खूब नै-ने कैलूं के जहां पर एतना बड़ा अखतियार दरोगा के देल गेल हे, जे हमनी सब से कम नै हे, और सायद कहीं पर बेसिए होत, ओहां पर आदमीयत के खेयाल करके लालच उ सब के रोके के भी उपाए कैल जाय; और दूसर बात के, सिलसिला खेयाल के भी सोच के पुलिस में ऐसन हे के जे जात से खराब हो जात।

नवाब - उ-हम ठीक नै सम-झ ही। ५० रुपया दरोगा के सुरू में मिले हे, उमीद १००) तक के हे और अच्छा काम कैला से निसपिटर, डिपटी, सोवरनडंट, भी हो सके हे। और भी दे-ख के ई-देस में ऐसन नै के कोई दूसर जगह ऐसन आदमी जब जाथ, तो उनखा एकरा से बेसी मिलत, और एतना में पांच बेकत अच्छा से गुजर कर सके हे। तब अगर ऐसन हालत में पुलिस पर कड़ाई से काम लेल जाए और सिकायत के ऊपर पूरा ध्यान देल जाए तो बहुत थोड़े दिन में ई ठीक हो जाए। कम-से-कम देखल तो एकाक दू जिला में जा सके हे के दरोगा जमादार कैसन काम क-र हथ और एकरे से सिलसिला खेयाल भी बदल सके हे, बाकी दूसर जे तु बोलला वहे असल मोसकिल हे। एकरा में बड़ी दिन में बदलत और सायद कोई दूसर गड़बड़ी जे अखने नै सुझे हे आ जाए। एहे वास्ते सबसे अच्छा उपाय जे हम बहुत दिन से सों-च ही, उ ई के दरोगा के नाम पर भी अब हो-व हथ डिपटी, एतना पढ़ल रहला पर, पूरा मुसाहरा मिलला पर भी खाली नाम के असर से कते घूस लेवे लगला ह। एहे हम सम-झ ही के डिपटी सब थाना में भेजल जाथ और ओहदा मोसाहरा एक सब के रखल जाए।

सिंघजी - केतना बड़ा खर्चा बढ़ जात?

नवाब - ६० करोड़ से फाजिल? जे गोला बारूद और खेआली दुसमन के रोके में खर्च कैल चाहे ओकरो से बेसी तो नै? ई इनसाफ हे के बाहर से केकरो नै आवल देल जाए, आफत रोकल जाए, एकरा ले तोप हवाई जहाज रखल जाए और घर में रैयत के पचासों ताजी कुत्ता छोड़ देल जाए, के झोल झोल के मारो। केतना अच्छा होए (और हमर मुरसाला के बारे में एहे अंग्रेज सब सिकायत क-र हथ के ऐसन हल) अगर सरहद पर से तोप बंदूक हटा

लेल जाए और हिन्दुस्तानी सब के हथियार रखे में रुकावट हटा लेल जाए तो मुर्दा हिन्दुस्तान के रग में खून दौड़े लगे। कब देखला तुं, के हवा के झिकोरा से बचल और धूप के गरमी से हटावल पौधा कोठरी में फूलल फरल हे? बाकी ओकरा से तेजारत, इंगलिस्तान के जादे, और और जगह के काम, बन्द हो जात, फिर मीर जुमला और मीरकासिम कोए नै मिलत!!

सिंघजी - बाकी ई बात तो होवे के नै। सरकार साठ करोड़ खर्चा चाहे अपन गरज से, चाहे अपन गलत समझ के वजह से, कम करवैया तो नै हे, और नै तोप गोला सरहद से उठा ले सके हे।

नवाब - तो टिकस बढ़ावे। हमर समझ हे के करीब-करीब फी मोकदमा में औसत पीछे थाना में २००) रुपया से कम देवे नै पड़े हे, और अगर खुलमखुल्ला फी-मोकदमा १०) इआ १५) कोटफीस ऐसन वसूल कैल जाए तो फी मोकदमा खर्चा डिपटी के मुसाहरावाला ऐसे निकल जात। जो गरीब रहे ओकर माफ कर देल जा सके हे और लोग खोसी से देता और ऐसन समझ से अमलन के रुसबत भी उठावल जा सके हे। कोटफीस बढ़ाके मुसहारा कुछ बढ़ा देल जा सके हे। और अदालत ऐसन फौदारियो में कायदा कर देल जा सके हे के जते कुछ दरखास्त पड़े फरीक के नकल देबल जाए।

सिंघजी - इझार-उझार के नकल में तो फेर रुसबत के जगह अदालत में तो बनले हे। वोकरो में जो सब हाकिम के टैप मिल जाए इया रोसनाई से लिख के तीन कारबन कोपी तैयार कैल जाए और ऐसहीं सब हुकुम के तीन-तीन कोपी तैयार करके एक-एक कोपी दुनु फरीक के देल जाए और एक-एक मिसिल में रहे तो कुल बखेड़े मेट जा सके हे।

नवाब - हम ई सब बात पर बड़ा किताब एक ठो लिखलूं हे और सरकार में पेस करे ले चा-ह ही बाकी हमरा डर हे के सुनत के?

सिंघजी - द, देखल जात, नै सुनत तो अपने जात।

नवाब - गेले हथ।

सिंघजी - तो कम-से-कम ई बरसात में हमरा हैरान नै कैल जाए। अनेरी मजिस्टर जहां रहथ वहां उनके काम देल जाए।

नवाब - हम की करूँ हमर इमान कांपे हे।

सिंघजी - तो ई सब के, खोंगीर के भरनी काहे ले रखल जात?

नवाब - दे-ख, जे इमनदार सब हथ उ जोर खुसामद नै क-र हथ और

ई तो पहिले के हाकमान के खोसामद करवैयन के जादेतर इनाम के पद मिलल हे।

सिंघजी - बड़ा मोसकिल हमरा मालूम होवे हे।

नवाब - अभी कुछ दिन चला-व तो।

अध्या 4

अंधारी रात हे। जरी-जरी रह-रह के बिजुली भी चमके हे। सामलाल एक आदमी के साथ भठियारी सराए के उत्तर नाला किनारे-किनारे बिजुली के हथबत्ती के सहारे टोते-टोते चलल जा हथ। जहां कहीं पत्ता-उत्ता खरखराए चौंक के एने उने देखे ल-ग हथ। आखिर उत्तर खिरकी पर पहुंच के सामलाल खटखटैलका।

एक बुढ़िया औरत भितरे से बोलल - के हे?

सामलाल - हम।

बूढ़ी - बाबू, अरे बाप! ऐसन रात में! - बोलते केवाड़ी खोल देलक।

सामलाल - का कहिओ! केतना क-ह हीऔ के दूसर मकान में डेरा बद-ल, तो मानबे नै क-र ह।

सामलाल अन्दर गेला और बूढ़ी केवाड़ी लगा देलक।

सामलाल पुछलका - नसीबन कहां हे?

बूढ़ी - उ का लेटल हे।

सामलाल नसीबन के नजिक जाके ओकरा हाथ पकड़ के उठैलका और बोलला - काहे बी?

नसीबन - बड़ा सर में दरद हे।

सामलाल - च-ल च-ल, नखरा छो-ड़। सच्चे नसीब तो बड़ हौ। मारे

डिपटी सब-डिपटी गुलाम बनल हथ।

बूढ़ी - औ मोखतार?

सामलाल - अरे हमनी सब तो उनके गुलाम, तो तोहनी के की?

नसीबन - सु-न, सच बात ई के सिंघजी आज आबेला हथ और फेर मालूम हो गेला से सब के लेल बड़ मोसकिल हो जात।

सामलाल - नै, सिंघजी के तो रसातल भेजल गेल हे। आझ बड़ा जा के कहलका-सुनलका हल बाकी दुसे आने चौकी कहीं पड़ल हे?

नसीबन - नै, खोदा के किरिआ, आझ माफ क-र।

सामलाल - काहे?

नसीबन - तोहरा की पड़ल हो? एते बड़ आदमी होके।

सामलाल - अरे नै बड़ा आदमी हथ, के उनकर बात उठाबे। लगल रहला से नजर उठा के देखले से तर जा स-क ही।

नसीबन - हां, से तो सु-न हीओ। खूब आझकल चलल हो। मारे मोअक्किल के अनठेल भीड़ रहे हे, बाकी और सब ओली बोली मारो हो।

सामलाल - मा-र भड़ुअन के! हमरा कौन चीज घटे हे जे केकरो परवाह हे। खाली हम चा-ह ही के तुं डिपटी साहेब से कह-सुन के हमरा राय बहादुर के लिखवा दे।

नसीबन - हम तो बड़ी कोसिस क-र हिओ और उहो खुस हथुन बाकी क-ह हथुन के ऊपर वालन सब तो आएं-बाएं क-र हथ। तोहर दुसमन सब कुछ बखेड़ा लगा दे हथुन के क-ह हथुन के कौन काम कैलका, कौन जमींदार हथ, अट-पट।

सामलाल - काहे! दे-ख असपताल में हम दू हजार रुपया देलवा देलूं और सेरम के नाम से बंक हमरे खड़ा कैल हे। पहिले रघुवर देयाल एसडीओ रट के मर गेला बाकी खाली चार ठो सुसैटी कायम भेल। हमहीं पचास ठो सुसैटी बनैलूं तो बंक चलल। बाबू ऐदल सिंघ के केतना गोड़ मुड़ पड़के कालिज बनवैलूं। हमरा ऐसन कोई मोखतारक-ह कहां? जमींदारी से की होबे-हे? अखनी लाखो रुपया क-ह निकाल दिओ। बिरजी-फिरजी एतना कोसिस कैलका कुछ स्कूल कालिज में? यहां हम उ सब के चले देलूँ? सगरो गाँधीजी के स्कूल बनल, यहां हमर मोकाबला में कुछ कोए कर सकल? खद्दर कोए नामो ने एहां ले। से केकर बदौलत?

नसीबन - हमरा की मतलब?

सामलाल - (चुंबा लेके और गोदी उठावे के कोसिस करके) समूचे जान तोरा हाजीर हौ।

नसीबन - (नखरा से अलग होके) हमर तबियत खराब हे, माफ क-र।

सामलाल - मालूम होवे-हे तोरा नवाब साहेब खुस नै क-र हथुन।

नसीबन - नै नै, से बात नै हे। आझ माफ क-र।

सामलाल - (नसीबन के पैर में हाथ लगाके) - दे-ख, हमर इज्जत र-ख। ऐसे की गड़बड़ क-र ह।

नसीबन - (अपन पैर हटा के बोले ले चहलक के बुढ़िया ओने से बदहवास आल) - अरे सिंघजी ऐलथुन! हम कुंजी लेवे के बहाने ऐलिऔ ह।

सामलाल और नसीबन दुनु सुख गेल।

सामलाल बोलला - अरे बचाव!

नसीबन - हमर कहने नै मा-न ह। ऊ कहलीओ के जरूर ऐतो। तो सामने चल जा दरवाजा से।

सामलाल - नै नै, उ तो सब दुकान खुलल हे।

नसीबन - तो बगल के कोठली में चल जा।

सामलाल - कोए हे।

नसीबन - तफजुला।

सामलाल - अरे बाप। उ तो कल्ह सगरो गोहार कर देत।

नसीबन - तब कहां बतलैओ?

सामलाल - दहिना बगल में कैसन कोठली हे?

नसीबन - (हंस के) पैखाना।

सामलाल झट से 'की होत' करते ओकरे में घुस गेला।

सिंघ जी ऐला और कुछ बड़ा रंज हला। बुढ़िआ से कुंजी खिरकी बंद कैला के बाद ले लेलका और कमरा में हेलला तो नसीबन माथा पकड़ले उठल और बोलल - आ-व, बै-ठ।

सिंघजी कुछ तीउरी बदल के बोल-ला - सामलाल आल हे?

नसीबन - नै, हम तो नै जानी। हमर तो सिर में दरद आज दीने से हे।

सिंघ जी - साला आज हमरा से फुटानी छां-ट हल। अपने बेइमान तो दुनिया के बेइमान और रुसबतखोर कहे। अब जे होए, हम देखवै सार के।

बाहर निकल के तफजुल के कोठरी में जाके देखलका तो कोए नै हे। फेर सामने बाहर के कमरा में, तो ओकरो में कोई नै मिललैन, फिर घुमला तो पैखाना देने नजर पड़लैन। ओकरा में जो लालटेन लेले गेला तो कोना में सटकल मुंह झांपले सामलाल के पैलका और 'साला-हरामखोर' बोलते चढ़ले लात मारलका।

सामलाल कर उठला - बाप रे!

सिंघजी (दुसर लात उठाके) - चुप, छछन्दर के बच्चा (और जेब से तमनचा खींच के और देखलाके) खबरदार, एहैं पर सारे बहादुरी खतम हो जैतो (और हाथ पकड़ के खींच के बाहर निकाल के नसीबन से) देख, ई कहां से जनमलौ।

सिंघजी, नसीबन और बुढ़िया सब कांपे लगली।

नसीबन - हम कइसे कह स-क ही, इ कैसे घुस अइला? इ तो बड़ा आदमी के एही सब लच्छन हे?

बुढ़िया (झट से कोरान जे टंगल हल ओकरा पर हाथ रख के) - खोदा के कसम, रसूल पैगम्बर के कसम। हमनी कुछ नै जानी। इ छौंड़ी के तो दीने से तबीयत खराब हे और ओकरे में हम परिसान हलूं।

सिंघजी - (सामलाल देने देख के) तब चचाजी इनका भेद लेवे ले भेजलथिन होत। उ तो अखनै हम ओतना आझ आरजु मीनत ओकरा से कैलूं और जब नै मानलक तो समझलूं के पक्का बदमास हे। हमरा पिछु-पिछु पड़ल हे। ऐसे सार चाहे हे के नाम होत और इ भंडुआ के (सामलाल तरफ इशारा करके) दे-ख ओकर पिछु पड़ले हे। एकरा से अच्छा तो और खराब काम करके छिपले छिपले कमा सके हे।

बुढ़िया - मोखतार साहेब, तूं सब गारत कैला। तूं काहे ला हमरा हीं चोर ऐसन ऐला।

सिंघजी - मोखतार साहेब, तूं सच-सच बो-ल, एहां कैसे औ काहे ऐला? नै तो जान से मार देवो, आगू पिढछू जे होत।

सामलाल - (कुछ वक्त पैला से सांत होके) हमरा से और एक दोस्त से बाजी लगल। उ कहे कि नसीबन किहां सिंघजी रोज जा हथ औ हम कहलूं कि नै। ओहे उ कहलक के सांझ के केवाड़ी खुले हे खिरकी में से तूं जाके देखि-ह।

सिंघजी - तो खिरकी में तो यहां बराबर ताला फेर लग जाहे औ लगल रहे हे? तूं जैते हल कैसे?

साम - इ तो हमरा मालूम हल नै ओकरे, जब कभी पहिले रहतूं हल तब ने जानतूं हल।

सिंघजी - इ तो खाली मुदालेह के सफाय हो; तूं तो परवीन इ सब में ह।

सामलाल - (सिंघ जी के गोड़ छू के) तुं ब्रह्मण ह। झूठ बोलूं तो कोढ़ी हो जाऊं।

सिंघजी - (कुच सिटपिटाल ऐसन) हम तो सुनलूं हल के तू रंडी ऊ मरदूद के यहां पहुंचा-व ह और एहे नसीबन जाहे। बाकी दुनु कसम खा-ह, और दुनु के बात ऐसन हमरा मालूम होवे हे के झूठो नै कह स-क ह। बाकी दे-ख; ई सब बात केकरो से कहि-ह नै। हमहूँ तोहनीए के पकड़े अएलूं हल। हमरा बारे में सब हल्ला कैले हथ के नसीबन के र-ख हथ। एक दम झूठ बात (फेर पिछला बात मोकदमा के खेयाल करके) एकाक दू मरतवे कसम नै खा स-क ही बाकी फेर नै। बाकी हमरा से कते आदमी कह देलका और हमहूं सब सम-झ ही के बराबर हमरा बाहर एहे खेयाल से छोलकटवा भेजे हे। हम तो कहे ले चाहूं के कहदी के जाल आल कर, हमरा कोए सरोकार नै हे, हमरा बनवास काहे ले दे हे। बाकी फेर लेहाज से डरूं भी।

सामलाल - हम नै जानु इसब, इसब में हम नै रहुं।

सिंघजी - काहे, हमतो सुनलीओ ह के सरबतिआ के तूं खासे करके रख लेला हे औ अलगे डेरा ले देलहो हे, एक ठो बेटा भी भेलो हे।

कसामलाल - ऊ हो गेल एक मरतबे गलती, बाकी रंडी पतुरिया में हम नै र-ह ही।

सिंघजी - अच्छा तो च-ल, हमनी सब से गलती हो गेल से होगेल बाकी अब एकर खेआल भुला जाए के चाही, हमनी सब के पुराना दोस्ती में खलल नै होए।

सामलाल - नै हुजुर।

सिंघजी फेर बुढ़िया के केवाड़ी खोले-ले कहलका और कुंजी दे देलका। बुढ़िया तब खिड़की खोल देलक। सिंघजी और सामलाल तब बाहर होला और खिड़की लग गेल। आगे चलके बोलला - दे-ख, ई अबरी जे ऐलो हे से

तरे सुइआ कढ़बइया हे, एकरा से जरी बचल रहिअ।

सामलाल - जी हां, हम दू कोस इनका से छटकल र-ह ही।

सिंघजी - दे-ख, इ सब बात केकरो से कही-अ नै।

सामलाल - नै हुजुर, यहो कोई बात हे!

अध्या 5

बाबू हलधर सिंघ तहिना रात के जब बाबू सामलाल से एहलदे होला और डेरा दने चलला हल तो रास्ता में तरह तरह के खेआल उनका होबन। कभी सोचथ के एकरा मारपीट कैलूं ह, इ आदमी बड़ा चुगलखोर हे और एसडीओ के दुलरुआ, कहीं अट-पट जाके लगा-बझा के नै कह दे और लड़ाए झगड़ा करा दे, फेर सोचथ के सरीफ आदमी कसम खेलक हे। ओकरा बारे जे हम सुनलूं से झूठ मालूम होवे हे; तो फेर दुलरुआ रहे के बात भी झुट्ठे खबर उड़ल बुझा हे, तो अपन ई बेइजती के बात सगरो गोदाल होवे के डर से इ सब बात के छेड़त कहों नै। रास्ता से फेर नसीबन के यहां आवे ले चहलका हल पर ओकर माथा में दर्द के बात इआद पड़ला से चुपचाप डेरा पर आके सुत रहला।

दुसर दिन छो-पांच करते इ तै कैलका के सामलाल के और नवाब साहेब के गटपटा देवे के चाही और नसीबन के एहां कड़ा पहरा कर देलका।

एने सामलाल लात के मार भुलल नै। लाज तो ओकरा नै आल बाकी रंजिस बाबू हलधर सिंघ से बड़ी ओकरा होल।

नवाब साहेब रात भर बड़ी परेसान रहला, नसीबन अब आवे हे, तब आवे हे। कैक मरतबे अरदली के उनकर डेरा पर भेजलका के ऐले रहथ बोला

लाओ। सड़को पर एने ओने देखे ले अपन नौकर-उकर के भेजलका बाकी आखिर में अरदली सामबाबू के एक पुरजी ले-ले आल के मोसकिल से जान बचल हे, दुसमन पहुंच गेल और रगेद मारलक, अखने तबीयत परेसान हे, पीछे मिलबो।

बिहान होके बाबू हलधर सिंघ भोरे नवाब साहेब किहां पहुंचला।

आदाब बन्दगी के बाद नवाब साहेब पुछलका के क-ह की हाल चाल?

सिंघजी बोलला - अच्छा हे, हम तो मर गेलूं। मामला मोकदमा के बात होते मोखतार सब के बात चलल।

नवाब साहेब बोलला - मोखतार सब तो मोसकिल कर दे हथ। कुछ असल बात तो हमनी के जाने नै देथ। काठ के उल्लू हमनी के बना र-क्ख हथ।

सिंघजी - सब परमेस्वर हीआं की जवाब लगैता, कुछ पते नै लगे। बाबू कन्हाए लाल से एक मरतबे हम पुछलीअन तो ऊ हमनीए के दोस देथ।

नवाब साहेब - हमनी के की दोस?

सिंघजी - एहे कि सच कहल जाए तो हमनी सब बिसवासे नै क-र ही।

नवाब साहेब - ई कुछ बात हे? असल ई क-ह के लड़ाई में कुछ कुछ दोस दुनु के रहे हे और अपन कसूर मुदई एकदम छिपा ले हे तो मुदालेह सोलह आना उठाके पी जाहे।

सिंघजी - तो होल ने। अब डर से मुदालेह अगर झूठ नै बोले तो मोसकिल ओकरा हे।

नवाब साहेब - मोखतार लोग दस, बीस छोड़ के करीब-करीब सब एक दम पेसे खराब कर देलका हे और ओकर असर तेजारत में आपाधापी के खेआल से वकील बरिस्टर सब भी करीब करीब वैसने होल जा हथ।

सिंघजी - नै, ई सब जादे खराब हथ। बहुत कम ऐसन हथ जिनकर चाल चलन, रहन सहन ठीक होए और तब परमेस्वर और ईमान धर्म के खेयाल कहां तक होत।

नवाब साहेब - तो वकील बरिस्टर कौन अच्छा।

सिंघजी - खाली थोड़े बहुत के फरक। हां, नेआ रोसनी के सब अएला हे उ सब पहिलन से कहैं बेस हथ, पुरनकन के दे-ख बिरले कोई ऐसन हथ जे सराब ताड़ी नै पीअथ और दास्ता ने रखथ।

नवाब साहेब - तो सामलाल तो पुरनकन में हथ, उतो बड़ा बेस आदमी, इ सब में नै बुझाथ।

सिंघजी - ओहो बड़ा कम्मल ओढ़ के घी पिबैआ।

नवाब साहेब - (हंस के तअजुज से) से की?

सिंघजी - चन्दन टीका खाली धोखा देवे के हे। ऐसे तो आझ कल के कचहरी से सरोकार रखवैआ जे चन्दन-टीका करे ओकरा में सैंकड़ा पीछू ९० के पक्का बेईमान और मोत्तफनी सम-झ। कोए कायथ ऐसन मिले तो ओकरा से अलग रहला, कोसभर फरक चलला से नफा छोड़ के नोकसान होवे के डर नै रहे।

नवाब साहेब - और कायथ सभ तोहनी बाभन के क-ह हथ।

सिंघजी - से-हे। बाकी कोई बाभन में सामलाल के जोड़ा के देखला दे, ऊपर से एतना चिक्कन बटलोही बाकी केतना घर खराब कर देलक हे।

नवाब साहेब - (बड़ा चाव से) से की?

सिंघजी - अगल बगल के कोई जात ओकरा भीरी नै होत जेकरा उ एक-ने एक धुन से खराब न कैलक होत। आझ-कल सहर भर में सब से खबसूरत कहारिन हे ओकरा फंसैले हे।

नवाब साहेब - (कुछ भओं सिकुड़ा के और मुसक के) हम नै जानलूं!

सिंघजी - बड़ा बड़ा एकरा में बखेड़ा होल। ओकर सौहर और मालिक बड़ा हल्ला करे ले चाहलका बाकी उ एक किसिम के धुरत औ नीच हे। झट साहेब सोबरनडंट कीहां ओकरा एक रात के दाखिल कर देलक तब तो उ सार जे भागल से बिहार आबे के नाम नै लेलक और कैक आदमी के पड़ला से ओकरा सौ-पचास रुपया देके दूसर सादी कर देल गेल।

नवाब साहेब - तो उनखा जोरू उरू नै हैंन?

सिंघजी - जोरू बड़ी खुबसूरत लोग बतला-व हथ। मेम के ऐसन सफेद और बाल आंख भी कुछ ऐसने। एकरे सब बदमास सब एक मरतबे हल्ला कर देलक के ऐकली साहेब कीहाँ अपना जोरूए के पहुँचावे हे।

नवाब साहेब - तोबा तोबा! उ बेचारी के मरन हो गेल होत?

सिंघजी - तो से की जानूं। बाकी एकरा हमनी सब खूब तहकीकात कैलूं। जोरू के बारे में तो झूठ एकदम हल बाकी चमेलवा के तो अपने उ दिन रात के डाकबंगला से ऐते देखलूं हल।

नवाब साहेब - तो तुं रात के कैसे देखला के ऐसन खुबसूरत हे।

सिंघजी - अरे ओकरा केते मरतबे ऐसहीं दिने के देखलूं हल और के नै ओकरा कमावेले चा-ह हल।

नवाब साहेब - तो तूं ओकरा कमैला हल?

सिंघजी - बदनाम होवे के हल? बाकी अगल बगल बालन के यहां कुछ दिन कमाल हल।

नवाब साहेब और भी जीरह उरह करके अपन मन के खेआल छिपाके चमेलवा के हाल जाने ले चा-ह हला बाकी एहे बखत डाक आरदली लेके आल और नवाब साहेब ओकरा देखे लगला और सिंघजी के डेरा से नौकर बोलवे आल तो आदाव करके चल गेला।

जाए घड़ी नवाब साहेब पुछलथिन - काहे चलला सिंघजी? - हां तो अखने अपन काम क-र - कहके चल गेला।

डाक में, एक आझ एक गुमनामी चीठी रांची से घोलटते पोलटते आल हल। कोई आदमी नवाब साहेब के बड़ी सिकायत कैलक हल और जादे सिकायत नसीबन कीहां जायके बारे में हल। ओकरा में कुछ रुसबत लेवे के भी सिकायत हल। सरकार से एकर जवाब मांगल गेल हल। नवाब साहेब तो सुख गेला और एकदम कुरसी पर पसर के सोंचे लगला के इ कौन बलाए भेल।

अध्या 6

आज भोर के सुरज उगल बाकी थोड़हीं देर में बादर घेर आल और होते होते बड़ी अन्हार हो गेल और रह-रह के बिजुली कड़के लगल। नवाब साहेब आझ दिन भर बड़ा सोंच में रहला। पिछली पहरा सामलाल के बोला भेजलका।

सामलाल ऐला तो नवाब साहेब के सुस्त पैलका। कुछ समझ में न ऐलन के की बात हे। राते कामियाब नै होल तेकरे से तो सुस्त नै हथ! बाकी इ-तो कोय काफी वजह नै हे।

अभी अप्पन अकिल दौड़ाइये रहला हल और बैठले चहलका के नवाब साहेब बोलला के मोखतार साहेब, ऐसन जगह तो हम कहीं नै देखलूं हल। हम खुद जेकर खिलाफ, से-हे दोस हमरा पर लगे। रूसबते रोके के कोसिस में ही और अपना अखतियार भर काम कर रहलूँ हे। से एहां के आदमी के दे-ख, कैसन सम नासुकरा मालुम हो-व हथ के...

सामलाल - की बात हे?

नवाब साहेब सामलाल के उ गुमनामी चिठिये दे देलका और कहलका के सब बात केकरो जाहिर नै होवे पावे।

सामलाल - नै हुजुर, हमरा से ऐसन उमीद क-र ह? - और पढ़े लगला।

नवाब - तब हम तोहरा पढ़े ले देतीओ हल। हम तोहरे तो एक अपन

आदमी सम-झ ही और नै तो हमर के हे?

सामलाल (पढ़ते पढ़ते बोलला) - इ-सब हुजुर के खाबिन्दी हे। - (थोड़े देर में पढ़ लेला के बाद बोललन) - सब आदमी के एहां तो एकरा में बेकार बदनाम करना हे।

नवाब साहेब - तब?

सामलाल - ई तो साफ मालुम होवे हे के जेकर नुकसान इया हरज हुजुर के काम से पहुँचल हे वहे देलक हे।

नवाब साहेब - अनेरी मजिस्टर लोग?

सामलाल - हो सके हे? बाकि उ-सब के नसीबन से की नफा, नोकसान?

नवाब साहेब - (कुछ खोस हो के) साबास मोखतार साहेब! समझलूँ। फिर तो मोखतारकारी के तजुरबा भी एक चीज हे।

सामलाल - नै हुजुर हमरा में एक खास वसफ हे। असल के पकड़ ले ही। हम बहुत के देखलूं। हसनइमाम गैरह के साथे, बलके जादे खिलाफे, काम कैलूं बाकी सब हमर लोहा एकरा से मा-न हथ; और खाली उ-सब के नाम बढ़ल हे नै तो हमरा मोकाबला में उ-सब बात हथ।

नवाब साहेब - ठीक हे, बाकी तुं तुरते कैसे पता लगा लेला?

सामलाल - खोदा-दादी अकिल हमरा सम-झ हे और कुछ बात याद भी पड़ गेल। कल्ह नसीबन के यहां जे हम छिपल छिपल बाबू हलधर सिंघ के बात सुनलूं तेकरा से यकीन ऐसन हो गेल।

नवाब साहेब - से की?

सामलाल - की कहिओ, बहुत बुरा बुरा तोहर सान में बोलल। क-ह हल कि आप बेइमान हे और दुसरा के बेइमान कहे-हे। हम देखवै अब जरूर। ऐसने-ऐसने बात।

नवाब साहेब - एकरे ले तुं नै राते ऐला? हम तो राते बड़ी परेसान रहलूं। बाकी आझ इ दूसर आफत मरदूद बुन्दलक। तो तुं ऐला कैसे?

सामलाल - तराह तराह करके बखत कटल। जब उ चल गेल तब निकललूं। बाकी बड़ी रात हो गेल तो ऊ नै आल।

नवाब साहेब - अच्छा तो एकर की उपाय कैल जाए? जवाब तो हम दे देवे बाकी हे जात के बाभन। बहुत सीधा तो हंसुआ ऐसन, पंचानवे हाथ

के अंतड़ी रखवइआ। दे-ख ने, ओकरा में लिखलक हे के तहकिकात कैल जाए तो कागजी सबूत भी दाखिल होत। की जानु कैक ठो चिट्ठी कुछ चन्दा उन्दा वास्ते लिखलूं हल जमींदार सब के, सायद वहे जमा कैले हे।

सामलाल - तो ओकर एकठो अपने आदमी ओकरा हीं रहे-हे और ओकरा उ बड़ी माने हे। बकस उकस भी कखनौ खोल देहे। ओकरा थोड़ा बहुत के लालच देला से उ सब काम कर दे सके हे।

नवाब साहेब - बाकी एकरा से काम नै चलत। गदहा के मांस बे रेह के नै सीझे। खाली अपना के बचौला से नै बनत जबतक एकरा पर वार नै कैल जात।

सामलाल - से तो ठीक हे। इ कांटा हे, एकरा जड़ मूल से उखाड़ के फ.के के चाही।

नवाब साहेब - तो गवाह ठीक करेला होतो और मोअजीज, मोअजीज?

सामलाल - एहे तो मोसकिल हे।

नवाब साहेब - नै, तुं सब कर स-क ह। एकतो तुं अपने हो-ल।

सामलाल - नै हुजुर, हमतो सब काम कर रहलूं हे बाकी हम बड़ी बदनाम हो रहलूँ हे और कुछ फायदा नै दे-ख ही।

नवाब साहेब - तोहरा हम राय बहादुर बनाके यहां से जैबो और जो नै होत हम हाथ काटके फेक देब। तुं ऐकरा में पुरा-पुरा हमराले कोसिस क-र।

सामलाल - जहां तक होत हम जरूर करबे!

अध्या 7

मामला तूल खींच गेल।

सरकार से हुकुम भेल के दुनु अफसर के बारे में जांच कैल जाय औ बराडवे साहेब कमिसनर एकरा ले तैनात कैल गेला। राम किसुन सिंघ जे हलधर सिंघ के ममेरा साला हो-व हला और जिनखा पर हलधर बाबू के बड़ी बरोसा र-ह हल उनखा नवाब साहेब सेकरेटरीअट में अपन रिसतेमंद से कहसुन के सब-रजिस्ट्रार बहाल करा देवे के लालच देके अपना दने मिला लेलका ओ कुल कागज-उगज जे इ मामला में नवाब साहेब के खिलाफ इया बाबू हलधर सिंघ के हसबखाह हल निकलवा लेलका औ एक दू रईस के औ राम किसुन सिंघ औ सामलाल के गवाह खड़ा करके झूठझूठ रूसबत लेवे के इलजाम बाबू हलधर सिंघ पर साबित करैलका और अपने निकल गेला।

नवाब साहेब के मदद में एक और मोखतार सरीक हो गेला हल, उनकर नाम हल बुलाकी खां। बाबू हलधर सिंघ डिसमिस हो गेला। जाए घड़ी बड़ा अफसोस में हला, राम किसुन के देख-व। सामलाल निरबंस रह-ब और पिल्लू-पड़के मर-ब और नवाब साहेब औ बुलाकी खां के भी ऐसने कुछ सराप देलका। हलधर सिंघ अपने तो खराब चाल चलन के जरूर हला बाकी बे-कसूरी में एते भारी सजाए पावे से उनकर खेआल दिल से परमेस्वर दने होल और एहे वजह हल कि करीब करीब अछरसह उनकर सराप तीने चार

बरिस में सबके हाथे हाथ पड़ल। बाकी इ बहुत दिन के बात हे।

जब माघ में बाबू हलधर सिंघ बरखास्त होके बिहार से चल गेला तो नवाब साहेब बाग-बाग हो गेला और सामलाल और बुलाकी खाँ के चलती के कोए बात न रहल। बुलाकी खाँ बाकी चाल चलन में याने रंडी सराब से एकदम अलग र-ह हला और एहे से नवाब साहेब जादे इ सब के बात बहुत में सामलाल के बराबर बोलावथ।

सामलाल अपन राय बहादुरी वास्ते बहुत गिरगिराथ के हुजुर अब तो हम सब काम कैलूं, कोए काम ऐसन नै जे हुजुर के वास्ते हम करे से इनकार कैलूं और अखनो नै क-र ही। दे-ख, सहर के बदमास सब अब परचा हमरे तरफ इसारा करके छपवैलका ह।

नवाब साहेब - कौन परचा?

सामलाल - दे-ख ने (नवाब साहेब के एकठो छपल परचा देके)।

नवाब साहेब - वाह रे! की हे खोसामद .... हमरा नै पढ़ल जाओ, नागरी में हे, जरी तुहीं प-ढ़ तो।

सामलाल - (पढ़े लगला) खां बहादुरी जनून के नुसखा -

चुगलखोरी	- ४।।० मासा
सुदेस द्रोहिता	- १।० ”
बेइमानी	- २।।० ”
	८।० ”
खुसामद	- ८।० ”

ई सब के अंग्रेजी विद्या फरोस के यहाँ से खरीद के सिआह सुर्ख मुफ्तख्वार के कुइआँ से आबे - कमिनपनई में खूब पीस के पी जाए! कुछ दिन फायदा नै होए तो माजूने भँड़ुअइ के साथ इस्तेमाल कैला से जरूर आराम होत।

नवाब साहेब - (मुसकुरा के) बहुत बदमासी कैलक हे। तुं नालिस क-र,

हम सब के देखबे।

सामलाल - मोसकिल तो इ हे के एकरा में छपवइया, लिखवइया, छापाखाना - इ सब के केकरो नाम हइए-नै हे औ नै पते लगे हे और दूसर बात ई के मोकदमा में और बेइजती सब करता।

नवाब साहेब - हम पुलिस में देही, उ सब पता लगवत?

सामलाल - नै, इ सब के जरूरत नै हे। हमरा सब जादे एहे ताना मा-र हथ के गजट निकललो मोखतार साहेब? और हुजुर से एकर खाबिन्दी नै होबे हे। अबरी पहली जनवरी के चार मरतबे गजट पढ़लूँ, कहीं हमर नाम के पते नै।

नवाब साहेब - जरी सहरपतिया के फेर हमरा से भ.ट करा द तो अब कसम खाके क-ह हीओ जरूर हो जैतो।

सामलाल - अरे खोदा! उ दिन रात के जे हुजुर नीसा में सूतल में ओकरा साथे जाके सुतला तो बिहान होके फेर हमरा तेरहो नीनान कैलक। पन्दरह दिन तक तो आना जाना बन्द कर देलक और फिर नाक दररते दररते हमरा मोसकिल हो गेल।

नवाब साहेब - तो फिर वोही तरकीब। अबरी हम ओकरा सुतले में चल आम। तबरी गलती हो गेल, हम सुतले रह गेलूं।

सामलाल - तो हम हुजुर के नाखोस नै कर स-क ही, बाकी अबरी हमरा पक्का खबर राय बहादुरी के मंगा देल जाए; ऐसे नसीबन तो ऐबे-जैबे करे हे।

अध्या 8

आझ सामलाल बड़ी खोस हथ।

पहिले दिन अंग्रेजी के चौथा महीना के हल। भोरे तार मिललैन के राय बहादुर हो गेला। नवाब साहेब किहाँ गेला और इनखा बोले से पहिले नवाब साहेब बोलला - मोबारक होबो। दे-ख हमर तो बदली हो गेल हे और हम समझलूं के तुं समझबा के झुट्ठे तोहरा बराबर दिलासा दे हलिओ। खैर, खोदा हमरा मुंह के लाज रख लेलका, नै तो सहरवाला लोग तोहरा हमरा पीछे में नोचथुन हल।

सामलाल -(दुनो हाथ से सलाम करके, बड़ा खोसी से गदगद) जी हाँ हुजुर, कुल मेहरबानी। (तार देखला के)

नवाब साहेब - हमरो हीं तो चिट्ठी आल हे (और निकाल के चिट्ठी सिक्रेट्रीयट के देलका)।

सामलाल - (चिट्ठी दु-तीन मरतवे पढ़ के) - कितना मोखतसर में और कितना खुबसूरत ई-सब लि-ख हथ!

नवाब साहेब - हां दे-ख, हमनी सब एकरे एक-दू सफा में लिखतूं हल।

सामलाल - हमरा बारे में तो राय बहादुर बाबू सामलाल उपरे में लिख देलक हे।

एतने में अरदली आके कहलक के राय बहादुर के खोजते ढेर से मोखतार वकील सब ऐला हे।

नवाब साहेब और सामलाल दुनुं उठ के बाहरे अइला और सबसे मिलला जुलला। सब बोलला के आझ पूरा तवाजा हमनी सब के होवे के चाही और हुजुर भी जा रहली हे, एकरे साथे रायबहादुरी के कर देवे के चाहिअन।

सामलाल कहला - हां, हां, जरूर। हम हरगिज तोहनी से अलग नै हिओ।

नवाब - जरूर, रायबहादुर, फिर अब हम कहां रहबे और तूं कहां रहबा।

सलाह होल के सहर भर में तवाजा कैल जाए और तब सामलाल बाबू सामसुन्दर प्रसाद मोखतार के, जे इ-सब में बड़ी आगू र-ह हला, दुकानदार और पान वाला के नाम से चिट्ठी देलका के जे जे चीज के जरूरत होवे द। समुच्चे सहर में रोसनी के भी इन्तजाम कैलका और सब के अपना तरफ से तेल-ढिबरी भेजवा देलका। मोखतार, वकील सब के एक नाटक के क्लब हल, उ आझ एक हंसी के नाटक करेला तैयारी कैलक। खोसी के मारे सामलाल के हवास के ठिकाना नै हल, कहां की इन्तजाम हो रहल हे, कुछ ठीक से नै देख सकथ। आखिरकार सब कोई खैलक पीलक, तमाम सहर में रोसनी होल, तब ८ बजे नाटक सुरू हो गेल।

नाटक सुरू होवे के पहिले सुतरधार आके कह गेल के बड़ी खोसी के बात हे, एहां आझ ‘फूल बहादुर’ हम खेलवे, खास करके आज एहे वक्त ल बनौलूं ह।

सामलाल और नवाब साहेब बड़ी खोस होला और नवाब साहेब बोलला - नाम तो बड़ी मजाक के मालूम होवे हे।

सामलाल - बहुत अच्छा खेल सब खे-ल हथ।

ड्राप उठते किउल स्टेसन देखलौलक।

नवाब - वाह, बड़ा अच्छा सीन-सीनरी इ-सब के पास हे।

सामलाल - जी हाँ हुजुर। हम भी एकरा में २००) के चपत में ही।

खेल सुरू होल तो उपर जे लिखल गेल हे ओकरे हेरफेर करके नाटक बनावल किताब के खेल होवे लगल। एक-दू सीन के बाद नवाब साहेब के सक होल के सामलाल के बात मालूम होवे हे। नवाब साहेब उ जगह निसपीटर हला और सामलाल के जगह में एक वृन्दाबन वकील। सरबतिया

के जगह पर वृन्दाबन के जोरू के नाम हल।

नवाब साहेब तब सामलाल से कहलका - इ-खेल के किताब हे? मां-ग तो।

सामलाल किताब मांगलका और नवाब साहेब पढ़लका तो पैखाना में वृन्दाबन के मार खाय के बात पढ़के बड़ी मजाक समझला कि जल्दी से आखिर में देखलका तो खैला-पीला के बाद वृन्दाबन के, नाटक के नायक के एक दोस्त, मोहर डाकघर, राय बहादुर के खबर वाला चिट्ठी में देखेले कहलक और जब वृन्दाबन देखलका तो 'रांची फूल्स पैरेडाइज' लिखल हल। गौर से देखलका तो मालूम भेल के कोई दूसर मोहर पहिले से हल और रांची वाला मोहर जरी से ओकरा पर हल। टिकट उखाड़ के देखलका तो नीचे अंग्रेजी में लिखल हल 'अपरैल फूल।'

पढ़ला पर नवाब साहेब सामलाल से कहलका - मामला गड़बड़ मालूम होवे हे, चिट्ठी तुं लेला हल हो?

सामलाल - जी, हां।

सामलाल चिट्ठी के तबतक समझ रहला हल और एस-डी-ओ एहां से लिफाफा के भी जेकरा अरदली फाड़ के बिग देलक हल, खोजके साथ रखले हला।

नवाब साहेब लिफाफा के मोहर के देखलका। ठीक, सिमला 'फूल्स-पैरेडाइज' के मोहर हल। 'साबस' कह के उठला और हंसते चल देलका। सामलाल तो खपत हो गेला, उ टिकट उखाड़ के देखलका तो साफ अंग्रेजी टाइप से नीचे में छपल हलः --

'फूल बहादुर'

MAGAHI (BIHARI)

SUNITA: *By Babu Jainath Pati, Mukhtear, Nawada, South Bihar : Printed at the Chitragupta Press, Gaya : 1928, pp. 16 : Price Two Annas.*

Babu Jainath Pati is a well-known Mukhtear of South Bihar, and an accomplished scholar and linguist who does not disdain his mother-tongue. We welcome this little story from him as one of the first publications of its kind in the speech of South Bihar which is current among a population of over six millions, who have already accepted Hindi as their literary language. The story is a slight one, showing the evils of marrying young girls to old husbands. The heroine runs away with a young man, her childhood's friend, and a great social evil is in this way exposed. The picture of some aspects of society in the Magah land as painted here is no doubt faithful, but there is not much characterisation.

With us, the value of this little work is primarily linguistic, but we hope the author will give us longer and equally faithful and preferably more pleasing pictures of life and society in South Bihar. An attempt like the present one is sure to be remembered among future students of Indian language and of social ethnology for the linguistic and the social material it preserves. Chap-books and popular books of verse are sometimes printed in Magahi for the masses who do not feel at home in High Hindi or who love the accents of their mother-tongue more than that of the speech of the law-court and the school, but only through a conscious literary effort like the present one that a neglected language can make a stand against the danger of being swept away.

It is perhaps too late in the day to think of creating a new litera ture in Magahi, especially when its speakers both educated and uneducated have no sense of pride in it and are seemingly a little ashamed of their 'little language' which they are making haste to substitute by an indifferent kind of Hindi, a mixture of High Hindi and Awadhi. But if some Magahi writer can lay open for us the soul of the Magahi people through works (poemes, dramas or novels) in their own language, he would certainly add a new world to the rich and varied domain of Indian literature. And Mr. Jainath Pati, scholar, man of affairs and lover of his people and his language, can very well be that Magahi writer.

S. K. C

The Modern Review, April 1928; Vol 43
में जयनाथ पति के 'सुनीता' उपन्यास पर
छपल सुनीति कुमार चाटूर्ज्या के समीक्षा के छाया प्रति.

MAGAHI (BIHARI)

SUNITA: By Babu Jainath Pati, Mukhtear, Nawada, South Bihar : Printed at the Chitragupta Press. Gaya : 1928, pp. 18 : Price Two Annas.

Babu Jainath Pati is a well-known Mukhtear of South Bihar, and an accomplished scholar and linguist who does not disdain his mother tongue. We welcome this little story from him as one of the first publications of its kind in the speech of South Bihar which is current among a population of over six millions, who have already accepted Hindi as their literary language. The story is a slight one, showing the evils of marrying young girls to old husbands. The heroine runs away with a young man, her childhood's friend, and a great social evil is in this way exposed. The picture of some aspects of society in the Magadh land is painted here is no doubt faithful, but there is not much characterisation.

With on the value of this little work is primarily linguistic, but we hope the author will give us longer and equally faithful and preferably more pleasing pictures of life and society in South Bihar, An attempt like the present one is sure to be remembered among future students of Indian language and of social ethnology for the linguistic and the social material it preserves, Chap books and popular books of verse are sometimes printed in Magahi for the masses who do not feel at home in High Hindi or who love the accents of their mother tongue more than that of the speech of the law-court and the school, but only through a conscious literary effort like the present one that a neglected language can take a stand against the danger of being swept away.

It is perhaps too late in the day to think of creating a new literature in Magahi, especially when its speakers both educated and uneducated have no sense of pride in it and are seemingly a little ashamed of their 'little language' which they are making haste to substitute by an indifferent kind of Hindi, a mixture of High Hindi and Awadhi. But some Magahi writer can lay open for us the sol of

the Magahi people through works (poems dramas or novels) in their own language, be would certainly add a new world to the rich and varied domain of Indian literature. And Mr. Jainath Pati, scholar, man of affairs and lover of his people and his language, can very well be that Magahi writer.

S. K. C

TheModern Review-April 1928 Vol 43, p 430

The Modern Review, April 1928; Vol 43
में जयनाथ पति के 'सुनीता' उपन्यास पर
छपल सुनीति कुमार चाटूर्ज्या के समीक्षा के टेक्सट.
(एकर हिंदी उलथा अगिलका पेज प देवल गेल हे)

जयनाथ पति : भाषाई दृष्टि से बेशकीमती*

बाबू जयनाथ पति दक्षिण बिहार के प्रसिद्ध मोख्तार हैं, और एक निपुण विद्वान व भाषाविद जो अपनी मातृभाषा का तिरस्कार नहीं करते। हम उनकी इस छोटी सी कहानी का स्वागत करते हैं, जो दक्षिण बिहार की भाषा (मगही) में अपनी तरह का पहला प्रकाशन है। वर्तमान में छह लाख से अधिक लोग इस भाषा को बोलते हैं पर वे अब अपनी साहित्यिक भाषा के रूप में लगभग हिंदी को स्वीकार कर चुके हैं। इसकी कहानी बेमेल विवाह की सामाजिक बुराई को दर्शाती है जिसमें एक जवान लड़की की शादी बूढ़े के साथ कर दी गई है। लड़की इस विवाह को स्वीकार नहीं करती। वह एक निम्नवर्गीय लड़के के साथ भाग जाती है जिसे वह बचपन से प्यार करती है और हमारे समक्ष एक भयावह सामाजिक बुराई का उद्‍घाटन होता है। मगही समाज के जिन कुछ पहलुओं की तस्वीर इस कहानी में चित्रित की गई है, निःसंदेह वे अत्यंत विश्वनीय हैं, लेकिन इसमें चरित्रों का बहुत अधिक विकास नहीं हो सका है।

यह एक छोटा-सा काम है परंतु प्राथमिक तौर पर भाषाई दृष्टि से बेशकीमती है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में लेखक दक्षिण बिहार के जीवन और समाज की ऐसी ही लंबी और विश्वसनीय तथा खासकर के इससे भी आकर्षक व सुखद तस्वीरें हमारे सामने प्रस्तुत करेंगे। एक कृति के रूप में इस मौजूदा प्रयास को आने वाले दिनों में भारतीय भाषा और सामाजिक नृवंशविज्ञान के छात्र निश्चित रूप से याद करेंगे क्योंकि इसमें भाषाई और सामाजिक तथ्यों का संग्रहण है। पद्यात्मक सस्ती और लोकप्रिय किताबें आम तौर पर और कभी-कभार मगही में छापी जाती हैं, जिन्हें श्रेष्ठताबोध वाले हिंदी घरों या वे लोग कोर्ट-कचहरी और विद्यालयों की भाषा के मुकाबले अपनी मातृभाषा से अधिक प्यार करते हैं, पसंद नहीं की जाती। इसमें कोई शक नहीं कि केवल इसी तरह के सचेत साहित्यिक प्रयासों के द्वारा एक उपेक्षित भाषा अपने विलोपन के खतरे को दूर कर सकती है।

वैसे, जहां तक मगही का नया साहित्य खड़ा करने की बात है, तो शायद अब बहुत देर हो चुकी है। क्योंकि शिक्षित और अशिक्षित दोनों तरह के ही मगही लोग मातृभाषा पर गर्व नहीं करते बल्कि वे हिंदी के, जो एक प्रकार से उच्च हिंदी और अवधी का मिश्रण है, मुकाबले अपनी 'देसी भाषा' को लेकर शर्मिन्दगी महसूस करते हैं। फिर भी मगही लेखक अपनी मातृभाषा में लेखन (कविता, नाटक या उपन्यास) के जरिए मगही समाज की आत्मा को झकझोर सकते हैं। ऐसा करके निश्चित रूप से वे सब साहित्य में एक नई दुनिया को शामिल करेंगे और भारतीय साहित्य में विविधता लाते हुए उसे समृद्ध करेंगे। श्री जयनाथ पति ऐसे ही एक सुख्यात मगही लेखक एवं विद्वान हैं जो अपने समाज, देश और मातृभाषा से बेइंतहा मोहब्बत करते हैं।

- सुनीति कुमार चटर्जी,
'द मॉडर्न रिव्यू', अंक 43, अप्रैल 1928,
कनलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पृष्ठ 430

---

* शीर्षक संपादक द्वारा देल गेल हे।

मगही के छपल उपन्यास

1. सुनीता (1927) - जयनाथ पति
2. फूल बहादुर (1928) - जयनाथ पति
3. गदहनीत - जयनाथ पति
4. बिसेसरा (अक्टूबर 1962) - राजेन्द्र कुमार यौधेय
5. आदमी आ देवता (1965) - डॉ० रामनन्दन
6. रमरतिया (1968) - बाबूलाल मधुकर
7. मोनामिम्मा (1969) - द्वारका प्रसाद
8. गोदना (जून 1978) - डॉ० श्रीकान्त शास्त्री
9. साकल्य - चन्द्रशेखर शर्मा
10. सिद्धार्थ - चन्द्रशेखर शर्मा
11. हाय रे ऊ दिन - चन्द्रशेखर शर्मा
12. सँवली (1977) - शशिभूषण उपाध्याय मधुकर
13. चुटकी भर सेनुर (फरवरी 1978) - सत्येन्द्र जमालपुरी
14. अछरंग (1980) - प्रो० रामनरेश प्रसाद वर्मा
15. बस एक्के राह (मई 1988) - केदार 'अजेय'
16. नरक सरग धरती (अक्टूबर 1992) - डॉ० राम प्रसाद सिंह
17. समस्या (1958) - डॉ० राम प्रसाद सिंह
18. बराबर के तरहटी में - डॉ० राम प्रसाद सिंह
19. सरद राजकुमार - डॉ० राम प्रसाद सिंह
20. मेधा - डॉ० राम प्रसाद सिंह
21. धूमैल धोती (1995) - राम विलास 'रजकण'
22. प्राणी महासंघ (अक्टूबर 1995) - मुनिलाल सिन्हा 'सीसम'
23. अलगंठवा (2001) - बाबूलाल मधुकर
24. बबुआनी अइँठन छोड़ऽ (मार्च 2004) - आचार्य सच्चिदानन्द
25. बाबा मटोखर दास - परमेश्वरी सिंह 'अनपढ़'
26. गोचर के रंगः गोरू-गोरखियन के संग - मुनिलाल सिन्हा 'सीसम'
27. उनतीसवाँ व्यास - रामबाबू सिह 'लमगोड़ा'
28. टुन-टुनमें-टुन - रामबाबू सिह 'लमगोड़ा'
29. शालिस (2006) - परमेश्वरी
30. तारा (2011) - रामनारायण सिंह उर्फ पासर बाबू
31. खाँटी किकटिया (2018) - अश्विनी कुमार पंकज

जयनाथ पति

गांव सादीपुर, जिला नवादा (बिहार) के मूल रहनिहार जयनाथ बाबू के जलम 1890 में आउ मिरतु 21 सितंबर 1939 में होल हलइ। जयनाथ पति मगही भाषा आउ साहित के पहिल अगुआन हथ। आधुनिक साहित के दुनिया में मगही बोलंत के लिखंत बनावे ओला पहिला चितेरा। पढ़े में ई खूब जेहनगर हलन। आई॰ ए॰ पास करके मोख्तारी के इम्तिहान पास कइलन। नवादा में इनखर मोख्तारी खूब चलल। इनका संस्कृत, अंगरेजी, महाजनी, बंगला आउर लैटिन भासा के जानकारी हल; उर्दू-फारसी के तो पारंगते हलन। धर्म-चर्चा में खूब दिलचस्पी हल। गांधीजी के सुराज आंदोलन में भी भाग लेलन। सन् 1931 ई॰ में नमक-कानून तोड़े के ओजह से ई कोट में बंद कर देल गेलन।

'फूल बहादुर' जयनाथ बाबू के दोसर उपन्यास हे। एकर परकासन भी 1928 में ही होयल हे। एक्कर में औपनिवेशिक भारत में व्याप्त आरथिक भ्रष्टाचार आउ लैंगिक शोषण के उधेड़ल गेल हे। लिखवइया के तिल भर भी सहानुभूति नैतिक रूप से पतित आउ भ्रष्ट हो गेल समाज बेबस्था प नयं हइ। से ले ऊ अप्पन लेखनी में कोय मरउव्वत न करऽ हे। बात बना-बना के नाउ नियन दिल-दिमाग आउ मुड़ी छिल्लऽ हे। चुभे व्यंग्य आउ हास-परिहास शैली में लिखल ई उपन्यास अलबत्त हे। पद आउ नाम के ललसा में अदमी केतना नीचे गिर जा हे एकर खूब बेस बरनन कयले हथ जयनाथ बाबू ई उपन्यास में। रामलाल जे बिहारशरीफ में मोख्तार हे ऊ अधिकारी सब्भ के सुरा-सुंदरी उपलब्ध करा के रायबहादुर बने के कोसिस करऽ हे। हर रकम के भ्रष्ट काम करऽ हे रायबहादुर के खिताब हासिल करे लेल ऊ। बकी तइयो रामलाल रायबहादुर बने से रह जा हे, हां 'फूलबहादुर' आने कि 'मूर्खबहादुर' जरूर बन जा हे।



प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन

चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009 झारखण्ड

www.kharia.in | www.akhra.org.in | pkfranchi@gmail.com